SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 22 • ISSUE 07 • SEPTEMBER 2023

हिन्दी मासिक

सितम्बर 2023

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

हम अपने अक़ीदे पर अटल हैं !

इस्लाम एक ऐसी मम्लकत है जिसकी सीमांए अटल हैं, वह सीमाएं अल्लाह की ओर से निश्चित हैं, ज़माने के उलट फेर से न वह टूट सकती हैं और न वह हिल सकती हैं, इस्लामी ढाँचा जिन क़ानूनी दस्तावेज़ों और प्राकृतिक सिद्धान्तों पर आधारित है वह अल्लाह की मरज़ी के अनुकूल है, उसमें वर्तमान और भविष्य की ज़रूरतों का लिहाज़ रखा गया है।

हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यब साहब रह.

(भूतपूर्व अध्यक्ष आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड)

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

सितम्बर 2023 वर्ष 22 अंक 07

अल्लाह से फरयाद

ऐ ख़ुदा हर तरफ़ ज़ुल्म का राज है
जो है ज़ालिम वही साहिबे ताज है
अद्ल पामाल है रहम ताराज है
बेकसों पर तशद्दुद रवा आज है
ज़ुल्म करते हैं जो उनसे ले इन्तिक़ाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

बोझ हम पर न रख जिसकी ताक़त न हो
काम वह तू न ले जिस की हिम्मत न हो
इस जहां में हमारी बुरी गत न हो
गैर के सामने हम को ज़िल्लत न हो
सारी दुन्या हमारा करे एहतिराम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

(मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताह्र अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
रहबरे इन्सानियत सल्ल0	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
रबीउल अव्वल का अस्ल संदेश	मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी रह0	12
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	15
सीरते रसूलुल्लाह सल्ल0	मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी	17
जाग हे भारतवासी जाग	हसनैन कैफ नवगांवी	20
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	21
ऐ नामे मुहम्मद सल्ल0	माहिरुल क़ादरी	24
हज़रत मुहम्मद सल्ल0	इं0 जावेद इक़बाल	25
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	28
आदर्श महिला	इदारा	29
मेज़बानी	नज़मुस्साक़िब अब्बासी नदवी	31
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	32
सीरत–ए–पाक सल्ल0	मौलाना हमजा हसनी नदवी	34
इस्लाम की आस्थाऐं	शेख अली तंतावी	35
शुगर मरीज न करें	डॉ0 लोकेश के0 भाटी	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात की खिदमत में	इदारा	42

क़ुअ्नि की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-हूदः-

अनुवादः—

कहा ऐ नूह! वह तेरे घर का नहीं, उसकी करतूत अच्छी नहीं है तो तुम ऐसी चीज़ का सवाल मत करो जो तुम जानते ही नहीं, मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि कहीं तुम अज्ञानियों में न हो जाओ(46) उन्होंने कहा ऐ मेरे रब! मैं इससे तेरी पनाह चाहता हूँ कि मैं तुझ से ऐसी चीज़ माँगू जो मैं जानता नहीं और अगर तूने मुझे माफ न कर दिया और मुझ पर दया न की तो मैं घाटा उठा जाऊँगा(47) कहा कि ऐ नूह! हमारी ओर से सलामती और बरकतों के साथ उतर जाओ तुम्हारे ऊपर भी और उन गिरोहों पर भी जो तुम्हारे साथ हैं, और कितनी क़ौमें हैं जिनको हम आगे ऐश देंगे फिर वे हमारी ओर से दुखद अज़ाब झेलेंगी[1](48) यह ग़ैब की वह खबरें हैं जो हम आपको भेज रहे हैं न इससे पहले आप उनको जानते थे और न आपकी क़ौम, तो आप जमे रहें बेशक नतीज़ा परहेज़गारों ही के पक्ष में है[2](49) और आद की ओर उनके भाई हूद को भेजा, उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की उपासना करो, तुम्हारे लिए उसके अलावा और कोई उपास्य नहीं तुम सब तो लपाड़िए हो[3](50) ऐ मेरी क़ौम! मैं इस पर तुम से बदला नहीं माँगता मेरा बदला तो उसके ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया, क्या फिर भी तुम नहीं समझते(51) और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अपने पालनहार से माफ़ी मांगो फिर उसी की ओर पलट कर आओ वह ऊपर से तुम पर मूसलाधार वर्षा करेगा और तुम्हारी शक्ति में और शक्ति की बढ़ोत्तरी कर देगा और अपराधी हो कर मत फिरो[4](52) वे बोले ऐ हूद! तुम कोई खुली निशानी ले कर तो आए नहीं और हम केवल तुम्हारे कहने से अपने उपासकों को छोड़ने वाले नहीं और न ही हम तुम पर विश्वास करने वाले हैं(53) हम तो यह कहते हैं कि हमारे कुछ देवताओं ने तुम को बुराई में जकड़ लिया है[5], उन्होंने कहा कि मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहना कि उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं जिसको तुम साझी ठहराते हो(54) उसके सिवा बस तुम सब मुझ पर दांव चलाओ फिर मुझे मोहलत भी न दो(55) मैंने तो अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, जो भी चलने—फिरने वाला है उसकी चोटी उसी के हाथ में है, बेशक मेरा रब सीधी राह पर है(56) फिर भी अगर तुम मुँह मोड़ोगे तो जो तुम्हारे लिए मैं ले कर आया हूँ वह मैंने तुम्हें पहुँचा दिया है और तुम्हारे अलावा अल्लाह किसी दूसरी क़ौम को तुम्हारी जगह आबाद कर देगा और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे बेशक मेरा रब हर चीज़ का निगहबान है[6](57) और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हमने हूद को और उनके साथ ईमान लाने वालों को अपनी कृपा से बचा लिया और उनको हमने सख़्त अज़ाब से बचाए रखा(58) और यह थे आद जिन्होंने अपने पालनहार की निशानियों का इनकार किया और उसके पैगम्बरों की बात न मानी और हर सरकश (उदण्ड) हठधर्मी की बात मानी(59) इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लग गई और क़यामत के दिन

भी, सुन लो! आद ने अपने पालनहार को न माना, सुन लो! हूद की क़ौम आद को धित्कार दिया गया(60) और समूद की ओर उनके भाई सालेह को भेजा, उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की बन्दगी (उपासना) करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, उसी ने धरती से तुम्हें बनाया और उसी में तुमको बसाया तो उससे माफ़ी चाहो फिर उसी की ओर पलटो, बेशक मेरा पालनहार क़रीब ही है स्वीकार करने वाला है(61) वे बोले ऐ सालेह! हममें इससे पहले तो तुमसे बड़ी आशाएं थीं, क्या तुम हमें उसकी पूजा से रोकते हो जिसकी पूजा हमारे बाप– दादा करते चले आए, और तुम हमें जिसकी ओर बुलाते हो उसमें तो हमें संदेह है ऐसा कि दिल ही नहीं ठहरता(62)

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. यह संकेत है कि आगे फिर लोग भटकेंगे और नष्ट (हलाक) किए जाएंगे।

2. पिछले तथ्य और घटनाएं जिसका ज्ञान किसी को न था उनका बयान करना खुद इस बात का प्रमाण है कि उसको यह बातें अल्लाह की वह्य से मालूम हो रही हैं।

3. तौहीद ही असल है, शेष जो तुमने पूज्य (माबूद) बना रखे हैं वह सब झूठ और मनगढ़न्त बातें हैं।

4. शुरु में अल्लाह तआला ने उन्हें सूखे में डाला था ताकि वे अपने असावधानी को छोड़ें और होश में आएं, हज़रत हूद अलैहिस्सलाम उसी को याद दिला रहे हैं कि यह एक सज़ा है, अब भी अगर तुम तौबा कर लो तो अल्लाह वर्षा कर देगा और तुम्हें निहाल कर देगा।

5. शिर्क करने वालों ने कहा कि तुम चूंकि हमारे माबूदों को बुरा–भला कहते हो इसलिए उन्होंने तुमको मुसीबत में जकड़ लिया है और तुम होश व हवास खो बैठे हो।

6. हज़रत हूद ने कहा तुम जो कर सकते हो कर डालो, मैंने अपने पालनहार पर भरोसा किया, सब कुछ उसी के हाथ में है, अगर तुम नहीं मानोगे तो तबाह हो कर रहोगे और अल्लाह तआला दूसरे को तुम्हारी जगह बसा देगा और यही हुआ, न मानने के परिणाम स्वरूप वे धित्कारे गए और अज़ाब में गिरफ़्तार हुए।

❖❖❖

अल्लाह के प्रतिनिधि के रूप में इन्सान की ज़िम्मेदारी

इदारा

हम ऐसे देश में हैं जहाँ मुसलमान बहुसंख्यक नहीं हैं यहाँ मुसलमानों को समस्याओं का समाधान स्वयं करना है, अल्पसंख्यक शासन से आशा नहीं रखते, शासन के भिखारी नहीं बनते, अपने मामलात खुद तै करते हैं, यहूद जहाँ हैं अल्प संख्यक हैं मगर वह अपने फ़ायदे और तरक़्क़ी के लिए स्वयं प्लानिंग करते हैं और जहाँ रहते हैं, वहाँ अपनी छाप डालते हैं। चूंकि उनको केवल दुनिया की चिन्ता रहती है, इसलिए उन्हें इन्सानी दुख दर्द का ख्याल भी नहीं आता, हमको ऐसा बनना है कि हम समस्त इन्सानों के लिए लाभदायक हों और हमारी जीवन प्रणाली से उनके लिए हिदायत का सामान हो, अगर आप दीन का इल्म प्राप्त नहीं करते, उद्योग और व्यापार के मैदान में जाते हैं तो आप समझ लीजिए कि अल्लाह तआला उसके द्वारा हमसे काम लेना चाहता है, उसके द्वारा भी हम अल्लाह को पहचान सकते हैं और उसके दिल व दिमाग़ में पहुँच सकते हैं और अल्लाह का ज्ञान दूसरों में उसके माध्यम से भी पैदा कर सकते हैं, इसी प्रकार साइंस का इल्म है, जियोलोजी, बाटनी, मेडिसिन, तिब इंजीनियरिंग का इल्म है। इन सबको यदि हम अल्लाह की निसबत और संबंध से सीखें तो इसके द्वारा भी हम अल्लाह तक पहुँच सकते हैं और दूसरे इन्सानों को उसके माध्यम से हम अल्लाह की ओर लाने और उसको ज्ञान पैदा करने और ज़िन्दगी का उचित उद्देश्य बताने का काम ले सकते हैं।

(तोहफ़–ए–गुजरातः पेज 153)

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

माँ -बाप के साथ अच्छे व्यवहार का बयान

कुर्आन में :–

अनुवादः–

और तेरे रब ने फैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत (वन्दना) न करो, और माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक करो, अगर उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएं तो उन्हें उफ तक न कहो, और न उन्हें झिड़को। और उनसे नेकी और शराफत वाली बात करो। और ज़िल्लत (हीनता) की जगह पूरी–पूरी दया और रहमत बन कर उनके सामने आओ, और (खुदा से) कहो– ऐ मेरे रब! जिस तरह इन्होंने बचपन में (मुहब्बत और दया के साथ) मुझे पाला–पोसा उसी तहर तू इन पर दया और रहम कर।

(सूरः इस्रा आ0 23–24)

और फरमान है–

अनुवादः–

और हमने इन्सान को जिसे उसकी माँ कष्ट पर कष्ट सह कर पेट में उठाए रखती है, फिर उसे दूध पिलाती है और दो वर्षों में दूध छुड़ाना होता है, उसके माँ–बाप के बारे में ताकीद की है कि मेरा भी शुक्र (धन्यवाद) अदा करना और अपने माँ–बाप का भी।

(सूरः लुक़मान–14)

और फरमान है–

अनुवादः–

और इन्सान को हमने अपने माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म दिया है, उसकी माँ ने दुःख के साथ उसे पेट में रखा और दुःख के साथ जना। (सूरः अहकाफ–15)

सबसे बेहतर अमलः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि0 फरमाते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआला को कौन सा अमल ज़्यादा पसन्द है? आप सल्ल0 ने फरमाया समय पर नमाज़ अदा कर लेना, फिर मैंने पूछाः उसके बाद? आप सल्ल0 ने फरमाया माँ–बाप से अच्छा व्यवहार, मैंने कहा उसके बाद? आप सल्ल0 ने फरमाया अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना।

(बुखारी व मुस्लिम)

दूध पिलाने के सम्बन्ध से जो रज़ाअी माँ–बाप हैं उनका सम्मानः–

हज़रत अबू तुफैल रज़ि0 बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को देखा आप सल्ल0 जिइर्राना (जगह का नाम है) में गोश्त बाँट रहे थे कि इतने में एक औरत आई और नबी सल्ल0 से करीब हो गई, आप सल्ल0 ने उस औरत के लिए अपनी चादर बिछा दी और वह उस पर बैठ गई, मैंने लोगों से पूछा यह कौन है? लोगों ने बताया कि यह आप सल्ल0 की रज़ाअी माँ हैं, (इन्होंने आपको दूध पिलाया है)। (अबू दाऊद)

हज़रत उमर बिन अस्साइब रज़ि0 बयान करते हैं कि उनको मालूम हुआ कि एक दिन अल्लाह के रसूल सल्ल0 बैठे थे, आपके रज़ाअी बाप आए, आप सल्ल0 ने कपड़े का एक हिस्सा उनके लिए बिछा दिया, और वह उसी पर बैठ गये, फिर आपकी रज़ाअी माँ आईं, आप सल्ल0 ने कपड़े का दूसरा हिस्सा उनके लिए बिछा दिया, वह उस पर बैठ गईं, उसके बाद आप सल्ल0 के रज़ाअी भाई आये, आप सल्ल0 उनके लिए उठ खड़े हुए और उनको अपने सामने बिठा लिया।

(अबू दाऊद)

माँ–बाप के दोस्तों और नातेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने का बयानः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन दीनार रज़ि0 बयान करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन उमर जब मक्का की ओर निकलते तो उनके साथ एक गधा होता था, जब आप सवारी (ऊँट पर) बैठे–बैठे उक्ता जाते तो मनोरंजन के लिए गधे पर सवार हो जाते, आपके पास एक पगड़ी थी जिसको आप सर पर बाँधा करते थे, एक बार आप गधे पर सवार थे, आपके पास से एक ऐराबी (अनपढ़ देहाती) गुज़रा, उससे आपने फरमायाः क्या तुम फुलाँ आदमी के बेटे फुलाँ नहीं हो? उसने कहा, हाँ। आपने गधा उसके हवाले कर दिया और कहाः तुम इस पर सवार हो जाओ, पगड़ी भी दे दी और फरमाया कि इसको बाँध लो, कुछ साथियों ने उन से कहाः अल्लाह आपको माफ फरमाए, आपने उस ऐराबी को वह गधा दे दिया जिस पर आप मनोरंजन करते थे और वह पगड़ी भी दे दी जो खुद बाँधा करते थे। (यह सुन कर) हज़रत अब्दुल्लाह ने फरमाया– मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को यह कहते हुए सुना है कि सबसे बड़ी नेकी और भलाई यह है कि आदमी अपने बाप के निधन के बाद उनके चाहने वलों के साथ अच्छा व्यवहार करे। उसके बाप हज़रत उमर रज़ि0 के दोस्त थे। (मुस्लिम)

माँ–बाप के जानने वालों के साथ अच्छा व्यवहारः–

हज़रत मालिक बिन रबीअः साअदी रज़ि0 से रिवायत है कि हम लोग अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास थे, इतने में बनू सलमा का एक आदमी आया और कहा कि ऐ अल्लाह के नबी! क्या कोई ऐसी भी नेकी है जिसको मैं अपने माँ–बाप की मौत के बाद भी उनके हक में करूँ, आपने फरमाया हाँ, उनके लिए अल्लाह से रहमत की दुआ करो और इस्तिगफ़ार (क्षमा–याचना) करो, उनके बाद उनके वादों को पूरा करो और उन रिश्तों को बाकी रखो जो उन्हीं के कारण से हैं और उनके दोस्तों का सम्मान करो। (अबू दाऊद)

हज़रत खदीजा रज़ि0 की श्रेष्ठताः–

हज़रत आइशा रज़ि0 बयान करती हैं कि आप सल्ल0 की बीवियों में जितना मैं हज़रत खदीजा रज़ि0 पर रश्क़ (उन जैसी होने की तमन्ना) करती थी उतना किसी पर नहीं, मैंने उनको देखा नहीं था, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल0 अधिकतर उनकी चर्चा करते थे, और कभी आप बकरी ज़बह करते तो उसके कई हिस्से करते और उन हिस्सों को हज़रत खदीज़ा रज़ि0 की सहेलियों को भेज देते, कभी–कभी मैं कहती– जैसे खदीजा के सिवा कोई औरत थी ही नहीं, मेरी बात सुन कर आप सल्ल0 फरमाते– खदीजा का क्या कहना, उनसे मुझे औलाद मिली।

(बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत आइशा रज़ि0 बयान करती हैं कि हज़रत खदीजा रज़ि0 की बहन हालः बिन्त खुवैलिद ने अल्लाह के नबी सल्ल0 से अन्दर आने की अनुमति चाही, उनकी आवाज़ से हज़रत खदीजा रज़ि0 की याद ताजा हो गई और आप सल्ल0 को एक खुशी मिली और कहा– ऐ अल्लाह! यह तो (खदीजा की बहन) हालः बिन्त खुवैलिद हैं। (मुस्लिम)

अन्सार की श्रेष्ठताः–

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 से रिवायत है कि मैं एक दिन जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली रज़ि0 के साथ निकला, वह मेरी सेवा करते थे, मैंने कहाः यह न कीजिए, उन्होंने जवाब दिया कि मैंने अन्सार को देखा कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 के साथ अच्छा सुलूक कर रहे हैं, मैंने कसम खा ली थी कि अन्सार में से जिसके साथ रहूँगा, उसकी सेवा और खिदमत करूँगा।

(बुखारी व मुस्लिम)

❖❖❖

सम्पादकीय

रहबरे इन्सानियत
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

जिस समय से इन्सान धर्ती पर आया उसकी रहबरी और रहनुमाई की आवश्यकता थी, इस अहम और ज़रूरी काम के लिए अल्लाह तआ़ला ने नबियों और पैगम्बरों को नियुक्त किया, जिनकी संख्या हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक एक लाख चौबीस हज़ार है। मानव इतिहास में सबसे सर्वश्रेष्ठ, आदर्णीय और पवित्र वर्ग नबियों और रसूलों का है, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले जो नबी और रसूल आए उनकी नबूवत, निश्चित समय, निश्चित क्षेत्र, निश्चित राष्ट्र के लिए होती थी, अल्लाह तआला ने फरमाया ''वलि कुल्ले क़ौमिन हाद'' *(और हर क़ौम के लिए मार्गदर्शक हुए हैं) सूरः रअ़द, आयत नं0 7,* जब अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रसूल बना कर भेजा तो फरमाया ***''और हमने आपको सारे संसारों के लिए दया (रहमत) बना कर भेजा है।'' (सूरः अल-अम्बिया आयत नं0 10)***

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत सीमित काल, सीमित वर्ग के लिए नहीं थी, आपकी नबूवत रहती दुनिया तक के लिए और संसार के सारे इन्सानों के लिए है वह किसी देश के हों, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो दीन ले कर आये उसे अल्लाह ने सम्पूर्ण कर दिया, किसी को उस दीन में घटाने बढ़ाने का अधिकार नहीं है, इसकी सूचना अल्लाह ने स्वयं दी, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अन्तिम हज हज्जतुल विदाअ़ के अवसर पर मैदाने अरफ़ात में कुर्आन शरीफ़ की यह आयतें नाज़िल हो रही हैं, आप सल्ल0 अपनी क़सवा ऊँटनी पर सवार हैं ***''आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दी और दीन के रूप में तुम्हारे लिए इस्लाम को पसंद कर लिया'' सूरः अलमाइदा आयत नं03।*** धर्म के रूप में इस्लाम को संसार के पालनहार और सृष्ठा ने पसन्द किया जो भलीभांति जानता है कि उसके बन्दों के लिए क्या चीज़ें लाभदायक हैं और क्या हानिकारक, इसका निर्णय वही कर सकता है जिसने उसको पैदा किया। कुर्आन की दूसरी आयतों में इसको और स्पष्ट कर दिया गया कि धर्म केवल इस्लाम है, जो प्राकृतिक है, सूरः आले इमरान में दो जगह अलग-अलग बताया गया है। ***''बेशक दीन (धर्म) तो अल्लाह के नज़दीक केवल इस्लाम ही है'' आले इमरान आयत नं0 19,*** दूसरी जगह फरमाया ***''जो भी इस्लाम के सिवा किसी और दीन को चाहेगा तो उससे वह हरगिज़ स्वीकार न किया जायेगा। और वह आखिरत में नुक्सान उठाने वालों में होगा''।***

सूरः आले इमरान आयत नं0 85। इस आदेश के बाद ज़रूरी था कि मानव जाति के प्रत्येक वर्ग को इस्लाम की दावत दी जाए चुनांचे नबी करीम सल्ल0 ने दूर और नज़दीक के शासकों को इस्लाम की दावत के पत्र भेजे ताकि वह अल्लाह के पसन्दीदा धर्म को अपनाएं, लोक और प्रलोक में सुख और सफलता का जीवन व्यतीत करें और सम्मान पाएं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन दावती पत्रों को नियुक्त संदेश वाहकों द्वारा शासकों और बादशाहों के पास भेजा, सिद्धान्त के अनुकूल नबी करीम सल्ल0 ने उन पत्रों पर अपनी मुहर भी लगाई, मुहर इस प्रकार थी, नामे मुबारक ''मुहम्मद'' नीचे उसके ऊपर ''रसूल'' उसके ऊपर ''अल्लाह'' एक पत्र शाहे हब्शा को भेजा जो हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़मरी लेकर गये, एक पत्र

शाह रूम को भेजा जिनका निवास स्थान शाम (सीरिया) था यह पत्र हज़रत दहया कलबी लेकर गये, तीसरा शाहे ईरान को भेजा जिसको हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी ले कर गये, चौथा शाह अस्कंदरिया मक़ूक़स मिस्र को भेजा, जिसको हज़रत हातिम बिन बलतअः लेकर गये, पाँचवा पत्र ग़स्सानी बादशाह हारिस बिन शिमर के पास भेजा जिसको हज़रत शुजा बिन वहब असदी लेकर गये, छटा शाहे यमामा को भेजा जिसे हज़रत सलीत बिन अम्र बिन अब्देशम्श लेकर गये।

इन बादशाहों और सरदारों में हबशा के बादशाह नजाशी और क़ैसरे रूम हिरक़ल ने दअ़वते हक़ पर ध्यान दिया और मुबारक ख़त की इज़्ज़त की और सन्देशवाहकों को सम्मान दिया, ईरान के बादशाह किसरा ने अनुचित बरताव किया और ख़त को फाड़ दिया और सिर्फ़ इस पर बस नहीं किया बल्कि अपने गवर्नर जो यमन में था, को ख़त लिखा कि आदमी भेज कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चेतावनी दे, लेकिन इस बदतमीज़ी की सज़ा अल्लाह की ओर से उसको मिली कि ख़ुद उसके बेटे ने ही विद्रोह करके उससे हुकूमत छीन ली।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने विदेशी शासकों के अलावा अरब शासकों को अलग से ख़त भेजे और उसका फ़ायदा भी हुआ, उनमें ओमान के बादशाह के पास हज़रत अम्र बिन आस के हाथ नाम–ए–मुबारक भेजा और उसका अच्छा नतीजा निकला, उसने सच्चाई को कुबूल किया, यमन के शासक हारिस अबदे कलाल को हज़रत मुआविया मख़्जूमी के हाथ ख़त भेजा उन्होंने फ़ौरन तो नहीं, मगर बाद में आज्ञापालन किया, हज़रत मुआज़ बिन जबल और हज़रत अली को नबी करीम सल्ल0 ने दअ़वते इस्लाम के लिए भेजा, इस प्रकार पूरे अरबद्वीप और आस पास के क्षेत्रों में इस्लाम की दअ़वत पहुँच गई, और दीन इस्लाम को प्रभुत्व प्राप्त हुआ, अल्लाह की विशेष मदद और निरन्तर मेहनत, परीक्षा के बाद इस्लामी काफ़िला अपनी मंज़िल की ओर बढ़ रहा था, यहां तक कि मक्का मुकर्रमा पर इस्लामी परचम लहराया, अल्लाह के घर ''काबा शरीफ'' को शिर्क की गन्दगी से पाक किया गया, काबा शरीफ अपनी पहली हैसियत पर वापस आया, सय्यिदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआओं को अल्लाह ने कुबूल फ़रमाया उन दुआओं को क़ुरआन शरीफ की सूरः बक़रा आयत नं0 125,126, 127,128 और 129 को पढ़िये और इस्लाम के विश्वव्यापी पैग़ाम को समझये, इब्राहीमी दुआओं का अनुवादः– ''और जब अल्लाह ने अपने घर काबा शरीफ़ को लोगों के लिए केन्द्र और शांति का स्थान निर्धारित किया और आदेश दिया कि मक़ाम–ए–इब्राहीम को नमाज़ की जगह बनाओ और इब्राहीम और इस्माईल से अल्लाह ने वचन लिया कि मेरे घर को तवाफ़ करने वालों, ऐतिकाफ़ करने वालों, रुकूअ़ व सज्दा करने वालों के लिए पाक कर दो, जब इब्राहीम अलै0 ने दुआ की कि ऐ मेरे पालनहार इस शहर को अम्न स्थली बना दे और यहाँ वालों को फलों की रोज़ी दे जो उनमें अल्लाह और आखिरत के दिन को मानें और जब इब्राहीम व इस्माईल अल्लाह के घर की बुन्यिादों को उठा रहे थे तो यह दुआ करते जाते थे कि ऐ हमारे पालनहार! हमसे यह काम स्वीकार करले, बेशक तू बहुत सुनने वाला, बहुत जानने वाला है, ऐ हमारे पालनहार! हम दोनों को अपना पूरे तौर पर अज्ञाकारी बना और हमारी सन्तान में भी ऐसी उम्मत बना जो पूरी तरह तेरी आज्ञाकारी हो और हमें हमारे मनासिक (हज करने का तरीक़ा) बता दे, और हमें माफ़ कर, बेशक तू बहुत माफ़ करने वाला बहुत दयालू है, ऐ हमारे पालनहार उनमें एक ऐसा पैगम्बर भेज दे जो उनको तेरी आयतें पढ़ कर सुनाए और उनको किताब व हिकमत की शिक्षा दे और उनका तज़किया करे, और बेशक तू ही है जो ज़बरदस्त है, भरपूर हिकमत वाला है'' नबी करीम सल्ल0 ने अल्लाह का पैग़ाम दुनिया वालों को पहुँचा

दिया और अल्लाह तआला ने दीने इस्लाम को मुकम्मल होने की ख़बर दे दी। अल्लाह के नबी सल्ल0 ने फ़रीज़–ए–हज की अदायगी का ऐलान फरमाया तो पूरा अरब द्वीप उमन्ड पड़ा, वह सब दीवाना वार अपने प्यारे नबी के साथ चल पड़े और फरीज़–ए–हज अदा किया, यह हज इतिहास में हज्जतुल विदाअ़ (विदाई हज) के नाम से मशहूर है, हज की फ़रज़ियत के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह पहला और आख़िरी हज था। हदीस की किताबें इस हज की तफ़सील से भरी पड़ी हैं, हज इस्लाम का महत्वपूर्ण रुक्न है और महत्वपूर्ण इबादत है, हज के हज़ारों मसायल इस ऐतिहासिक हज से सम्बन्धित हैं।

हज्जतुल विदाअ़ (विदाई हज) के अवसर पर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने जो ख़ुत्बा दिया उसे रहती दुनिया तक याद किया जायेगा। अल्लाह के नबी सल्ल0 ने जो आदेश दिया वह मानव अधिकार का पूर्ण चार्ट है। यदि दुनिया की हुकूमतें उस पर सच्चे दिल से अमल करें तो हर जगह शांति ही शांति फैल जाए। ऐतिहासिक ख़ुतबा बहुत लम्बा है। उसके कुछ अंश उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हैः–

''लोगो! बेशक तुम्हारा रब पालनहार एक है और बेशक तुम्हारा बाप एक है, हाँ अरबी को अजमी पर, गोरे को काले पर, और काले को गोरे पर श्रेष्ठता नहीं, मगर तक़वा (संयम) से''।

''जाहिलियत की तमाम प्रथायें मेरे दोनों पावों के नीचे हैं'' जाहिलियत के तमाम खून माफ़ कर दिये गये। और सबसे पहले मैं अपने ख़ानदान का खून रबीअः बिन हारिस का ख़ून समाप्त करता हूँ। जाहिलियत के तमाम सूद समाप्त कर दिए गये, और सबसे पहले अपने खानदान का सूद अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का सूद ख़त्म करता हूँ, औरतों के मामले में अल्लाह से डरो, तुम्हारा औरतों पर और औरतों का तुम पर अधिकार है। बहुत ही महत्वपूर्ण और आवश्यक बातें आप सल्ल0 ने फ़रमाईं– ''तुमसे अल्लाह के यहां मेरे संबंध में पूछा जाएगा तुम क्या जवाब दोगे'', सहाबा ने अर्ज़ किया ''हम कहेंगे कि आप सल्ल0 ने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया और अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया''। आप सल्ल0 ने आसमान की तरफ़ उंगली उठाई और तीन बार फरमाया ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना, ठीक उसी समय जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह फ़र्ज नबूवत अदा कर रहे थे सूरः माइदा की आयत नं0 3 उतरी ''आज मैंने तुम्हारे लिए दीन को मुकम्मल कर दिया और अपनी नेमत तमाम कर दी और तुम्हारे लिए मज़हबे इस्लाम का इन्तिख़ाब कर लिया''।

हज्जतुल विदाअ़ के मौक़े पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो ऐतिहासिक ख़ुत्बा दिया था उसकी विशेषताएं निम्नलिखित हैः–

o अरब में किसी खानदान का कोई व्यक्ति किसी के हाथ से क़त्ल होता तो उसका बदला लेना खानदानी कर्तव्य हो जाता था, यहाँ तक कि सैकड़ों वर्ष गुज़र जाने पर भी उसका बदला लिया जाता था, इसी बिना पर लड़ाईयों का न ख़त्म होने वाला सिलसिला क़ायम हो जाता था, और अरब की ज़मीन हमेशा ख़ून से रंगीन रहती थी, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जाहिलियत के तमाम ख़ून ख़त्म कर दिए गये।

o तमाम अरब में सूदी कारोबार का एक जाल फैला हुआ था जिससे ग़रीबों का रेशा रेशा जकड़ा हुआ था और हमेशा के लिए वह अपने क़र्ज देने वालों के गुलाम बन गये, आज वह दिन है कि उस जाल का तार तार अलग होता है।

o आज तक औरतें जाएदाद मनकूला चल संपत्ति थी जो जुऐ में दांव पर चढ़ाई जा सकती थी, आज पहला दिन है कि इस उत्पीड़ित वर्ग के सर पर सम्मान का ताज रखा जा रहा है ''औरतों के मआमले में ख़ुदा से डरो'' तुम्हारा औरतों पर औरतों का तुम पर हक़ है''।

हज़ारों दुरूद और हज़ारों सलाम
ब रूहे मुहम्मद अलैहिस्सलाम

❖❖❖

रबीउल अव्वल का अस्ल सन्देश

मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी रह0

एक ख़ुदा की बन्दगी और रसूल0 सल्ल0 की ताबेदारी और मुहब्बतः—

मिल्लते इस्लामिया का वजूद और उसकी स्थिरता जिन विशेषताओं से सम्बन्धित है, वह एक खुदा की बन्दगी, और अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताबेदारी और आप की मुहब्बत है। तौहीद (एक खुदा पर विश्वास) की विशेषता तो मुसलमानों को शिर्क करने वाली क़ौमों और व्यक्तियों से अलग करके एक खुदा की उपासना और उसी के आदेशों को मानने वाला बनाती है। दूसरी विशेषता अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताबेदारी और यह आस्था कि आप सल्ल0 अल्लाह के आख़िरी नबी हैं और आप का लाया हुआ दीन आख़िरी और मुकम्मल दीन है। यह विशेषता सभी मुसलमानों को एक मज़बूत और एकताबद्ध क़ौम बनाने वाली है। मिल्लते इस्लामिया की यह दो विशेषताएं न केवल इसे दूसरी क़ौमों से विशिष्ट (मुम्ताज) बल्कि उनके द्वारा मुसलमानों में ऐसी एकता, मेल मिलाप और मुहब्बत पैदा करती हैं जिसकी मिसाल दूसरी क़ौमों में नहीं मिलतीं, शिर्क वालों के तरीक़े, आदतें और कर्म, क्षेत्र की विभिन्नता के साथ अलग अलग मिलेंगे। इसलिए कि तौहीद (एकेश्वरवाद) के अक़ीदे के अतिरिक्त कोई ऐसी प्रभावी शक्ति नहीं है जो किसी कौम में एक रूपता और एका पैदा करे और अन्तिम रसूल के अन्तिम सन्देश और मुकम्मल दीन पर आस्था और उनकी मुहब्बत उम्मत के लोगों में जो भाई चारा और प्रेम पैदा करती है और मुस्लिम देशों के हर देश के मुसलमानों को एक दूसरे से जिस प्रकार जोड़ती है उस प्रकार कोई और साधन जोड़ पैदा नहीं कर सकता।

चुनांचे मुसलमानों में रंग, नस्ल, भाषा, संस्कृति क्षेत्रीय और मातृभूमि की तरह की भिन्नता के बावजूद भाईचारगी और सम्बन्धों का ऐसा वातावरण बन जाता है कि दूसरे लोग हैरत में पड़ जाते हैं लेकिन मुसलमानों की यह दोनों बुनियादी विशेषताएं उसे उस समय प्राप्त होती हैं जब वह तौहीद पर पूर्ण आस्था रखने के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत और उनके निर्देशों पर अमल करने के पाबन्द हों। रसूल की मुहब्बत इस का बड़ा ज़रिया रहा है और हदीस शरीफ़ में इसका वर्णन ताकीद के साथ किया गया है।

तुममें से कोई व्यक्ति भी उस समय तक मोमिन (हक़ीक़ी मुस्लिम) नहीं हो सकता जब तक मैं उसको इतना प्रिय न हो जाऊँ जितना न उसके पिता, न उसका बेटा और दुन्या का कोई दूसरा व्यक्ति हो।'' अर्थात अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुसलमानों की मुहब्बत अपने बाप, बेटे और हर इंसान की मुहब्बत से अधिक हो। यह है वह दर्जा जो हक़ीक़ी सच्चे मुसलमान का बताया गया है।

मुसलमानों को जब अपने अन्तिम रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसी बड़ी और

गहरी मुहब्बत होती है तो न तो उस को आपके बताए हुए अक़ीदे के अतिरिक्त कोई दूसरा अक़ीदा कुबूल होता है और न कोई ऐसा रस्मोरवाज या अमल जिसको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना किया हो या नापसन्द किया हो। जब उस को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वास्तव में सबसे अधिक प्रेम होगा तो उसका दीन शुद्ध (खासिल) और उसका प्रभाव और उसकी फ़रमाबरदारी (आज्ञापालन) मुकम्मल होगी और यही वह प्रभाव और ताक़त है जो ज़माने के साथ कम होने के बावजूद आज तक मुसलमान के दीन को बाक़ी रखे हुए है। संसार के दूसरे धर्मों चाहे आस्मानी हों या ज़मीनी, सब ज़माने के प्रभाव से अपनी असल हालत से बहुत दूर हो चुके हैं लेकिन इस्लाम आज भी अपनी सही रूप रेखा में बाक़ी है। इसका दीनी रूप वही है जो उसके आखिरी नबी ने आज से चौदह सौ साल पूर्व बनाई और सिखाई थी। इसका असल कारण एक खुदा पर ईमान और अकीद–ए–रिसालत (रसूल पर पूरी आस्था) है जो इस्लाम को अपनी जगह से हटने नहीं देती और इसमें हमारी मदद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताबेदारी का सम्बन्ध व प्रेम और उनके कथन और आदेश पर अमल या अमल की इच्छा शक्ति करती है। हम को जब भी किसी धार्मिक मामले में या किसी दूसरे धर्म को देख कर किसी बात में सन्देह पैदा होता है या जानकारी की आवश्यकता होती है तो हम खुदा–ए–वाहिद की भेजी हुई किताब कुर्आन मजीद को, जिसको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ले कर आए, सबसे पहले देखते हैं और जो उन्होंने फरमाया और बताया और खुद करके दिखाया और जो उनके सहाबा रज़ि0 ने उनकी तरफ़ से बताया या उनकी बात पेश की उसको देखते हैं और वहां से जवाब प्राप्त करते हैं। चुनांचे हम इस प्रकार भटकने से बच जाते हैं और सच्चे मार्ग पर चलते हैं लेकिन यह आज्ञापालन और सच्चे मार्ग की यह तलब और सच्चे दीन की यह फ़िक्र उसी समय काम करती है जब हम को अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत और आज्ञापालन से सम्बन्ध हो और यह एहसास हो कि क़यामत में जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम को देखेंगे तो सच्चे दीन की फ़िक्र और शरीअ़त का अनुपालन और सुन्नते नबवी सल्ल0 पर अमल के सिलसिले में हम ने दुन्यावी ज़िन्दगी में क्या किया उसको देख कर हमारे रवैय से खुश हो कर हमको अच्छी नज़र से देखेंगे या हमारे बुरे कर्मों को देख कर मुँह फेर लेंगे और कहेंगे ऐ पालनहार यह लोग हमारे नहीं हैं। उन्होंने हमारे तरीक़े को नहीं अपनाया था। उनको दुन्या के दूसरे लोगों और चीज़ों से अधिक प्रेम था लेकिन मुसलमान को जब सचमुच अपने नबी सल्ल0 से प्रेम होगा तो वह प्रेम उसको नबी सल्ल0 के आदेशों और उसकी लाई हुई शरीअ़त और दीन से हट कर कोई काम करने में आड़े आजाएगा और ध्यान दिलायेगा कि ऐ रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्यारे तुम क़यामत के दिन अपने नबी को क्या मुँह दिखाओगे और खुदा के हुजूर में तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या कह कर तुमको पेश करेंगे। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम करने वालों का यह एहसास

उसके दर्मियान और खुदा और रसूल सल्ल0 की नाफरमानी के दर्मियान एक पुश्ता बन कर आ जाता है जो उसको गलत और नाफरमानी के काम से रोक देता है।

आवश्यकता है कि हम अपना जाएजा लेते रहा करें कि जो लोग हमें प्रिय हैं या जिन चीज़ों को हम पसन्द करते हैं हुजूर सल्ल0 की मुहब्बत या लगाव से उनकी मुहब्बत या उनसे लगाव अधिक बढ़ा हुआ तो नहीं है कि वह हमको उस जीवन शैली से हटा दे जो हमको हमारे प्रिय नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया है और क़यामत के रोज़ हम को उनके सामने शर्मिन्दा तथा संसार के पालनहार के सामने हमको मुजरिम बना कर खड़ा कर दे।

हमारे अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हमारी मुहब्बत आखिरत में सफलता दिलाने के साथ इस सांसारिक जीवन में मुसलमानों के दर्मियान एकता और भाईचारे की फ़ज़ा कायम करती है। और काले गोरे के अन्तर के बावजूद मुसलमान हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाये हुए दीन व शरीअ़त को तस्लीम करने वाले हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम का यह सम्बन्ध मुसलमानों को आपस में जोड़ने वाली एक जबरदस्त शक्ति है जो उसको बुराईयों और गुमराहियों से बचाने वाला एक बड़ा साधन बन जाती है। यह एक महान वरदान है बल्कि मिल्लते इस्लामिया के ज़िन्दगी की पूँजी है इसकी सुरक्षा की हमेशा चिन्ता करना आवश्यक है लेकिन इसके लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपना लगाव बढ़ाना और आप की बताई हुई ज़िन्दगी को अपनाने की फिक्र करना होगा। आपके पवित्र जीवन शैली और हालात को जानना होगा और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक खुदा पर ईमान लाने और उसके आदेशों का पालन और उसकी बन्दगी करने के लिए जो हिदायात दी हैं उन पर अमल करना होगा और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके लिए जो तकलीफ़ें उठाईं मुसीबतें झेलीं और कुर्बानियां दीं, उनको देखना होगा और उनसे रोशनी हासिल करना होगा ताकि हम आख़िरत में अपनी सफलता और श्रेष्ठता का सामान कर सकें और अपने को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने क़यामत (हिसाब किताब) के दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उम्मती की हैसियत से पेश कर सकें। हर माहे रबीउल अव्वल की यह तारीखें जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत और उनकी लाई हुई जीवन शैली की अपनाने को तलब पैदा करती है वह बाक़ी रहे, कमज़ोर न हो, तुम उसको भूल न जाओ और उसकी विशेषता के बाकी रखने से लापरवाह न हो जाओ। यही सन्देश हम को अल्लाह की किताब कुर्आन मजीद से मिलता है और यही पैग़ाम सीरत के जलसों से मिलता है और यही पैग़ाम हमको सीरत की किताबों और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों से मिलता है। अल्लाह तआला हमको सच्चे मार्ग पर चलने की क्षमता प्रदान करे जिसकी निर्भरता एक खुदा की बन्दगी और उसके आखिरी रसूल की ताबेदारी और उसकी मुहब्बत पर है।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

आख़िरत पर ईमानः–

आखिरत का अकीदा इस्लाम के तीन बुनियादी अकीदों में से है, जब तक आखिरत का यकीन न हो और इन्सान उसको दिल से न मान ले, उस वक़्त तक वो मुसलमान नहीं हो सकता, सूरह बकरह के शुरू ही में मुत्तकी लोगों की जो सिफतें बयान हुई हैं उन में सबसे ज़्यादा अहमियत के साथ आखिरत पर ईमान का तजकिरा है, इरशाद होता हैः–

अनुवादः– ***''और आखिरत पर यही (लोग) यकीन रखते हैं।'' (अल–बकरहः 4)***

इंसान की जिन्दगी में खौफे खुदा के बाद सबसे गहरा असर जिस चीज़ का पड़ता है वो आखिरत के यकीन का है, जिसको जितना ज़्यादा आखिरत का खयाल और याद रहता है उसके आमाल व अखलाक उसी के ऐतबार से मुरत्तब होते हैं, कुरआन मजीद में तौहीद के अकीदे के बाद आखिरत के ध्यान की दावत दी गयी है, इसकी बुनियादी वजह यही है कि तौहीद और आखिरत ही इंसानी जिन्दगी में तब्दीली पैदा करने और उनको सही सिम्त पर लाने की सब से ताकतवर बुनियाद हैं, अगर ये बुनियादें न हों तो इंसान की ज़िन्दगी सूखी लकड़ी हो कर रह जाए और सिवाए दुनियावी नफा नुक्सान के और कोई चीज इंसान के अंदर हरकत पैदा करने वाली न हो, जिस तरह तौहीद के अध्याय में ये बात गुजर चुकी है कि इसके विवरण की जानकारी सिर्फ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही से होती है इसी तरह आखिरत की जानकारी के इल्म का भी सिर्फ एक ही ज़रिया है, और वो सिर्फ पैगंबर हजरात हैं, जिनके इमाम हमारे आका मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जिनके जरिये से आखिरत की तफ्सीली बातें मालूम होती हैं, अगर नबियों की शिक्षाएं न हों तो इंसान आखिरत के सिलसिले में भटकता ही रहे, अल्लाह ताला फरमाता है–

अनुवादः– ***''बता दीजिए कि आसमानों और जमीन में ढकी छिपी चीज़ का जानने वाला कोई नहीं सिर्फ अल्लाह है, और उनको इसकी ख़बर भी नहीं कि वो कब उठाए जाएंगे, बात ये है कि आखिरत के बारे में उनका इल्म बिलकुल ठप पड़ गया है, बल्कि वो उसके बारे में शुब्हे में हैं, बल्कि (सच्चाई ये है) कि वो इस सिलसिले में अंधे हैं।'' (अन्नमलः 65.66)***

अब आखिरत के यकीन के बाद इंसान अपने अंदर क्या तब्दीली लाए और क्या तरीका अपनाए इसका सहीह रास्ता मालूम करने का सिर्फ एक ही रास्ता है जिसका तअल्लुक रिसालत के अकीदे से है, अल्लाह की खुशी के काम मालूम करने का इसके अलावा कोई रास्ता नहीं, रसूलों ही से इंसानों को हिदायत मिलती है, जिनमें आखिरी रसूल हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआ़ला ने सारी दुनिया की हिदायत के लिए भेजा है, ये सब अकाएद वो हैं जो इंसान को सही दिशा देते हैं, उसकी जिन्दगी में अच्छी क्रांति पैदा करते हैं और उसको असल कामयाबी देते हैं, अगर ये तीन बुनियादी अकायद डगमगा जाएं तो इंसान की जिन्दगी भी दुनिया के थपेड़ों में घिर कर रह

जाती है, और इसी उतार चढ़ाव में वो अपनी उम्र पूरी करके मौत के घाट उतर जाता है, और दूसरी जिन्दगी उसकी बद से बदतर होगी , जहां हसरत व निराशा के और कुछ उसके हाथ न लग सकेगा।

आखिरत का मतलब आखिर में आने वाली चीज के हैं, कुरआन मजीद में ये शब्द 113 जगहों पर आया है, कई जगहों पर सिर्फ शब्द ''आखिरत'' आया है, और कई एक जगहों पर स्पष्ट करते हुए इसका इस्तेमाल हुआ है, इरशाद होता है–

अनुवादः– ***''और ये दुनिया की जिन्दगी बस खेल तमाशा है और असल जिन्दगी तो बस आखिरत ही का घर है, काश कि वो जान लेते।''***

(अंकबूत– 29/64)

दूसरी जगह इरशाद है–

अनुवादः– ***''और आखिरत का घर ही बेहतर है।''***

(अनआम–32)

सूरह तौबा में इरशाद है–

अनुवादः– ***''क्या तुम आखिरत के मुकाबले में दुनिया ही की ज़िन्दगी में मग्न हो गए हो''***

(अल–तौबः 38)

इन प्रयोगों से पूरी तरह से बात साफ हो जाती है कि जहां कहीं भी शब्द ''आखिरत'' अकेला इस्तेमाल हुआ है उस से मुराद आखिरत का घर या आखिरत की ज़िन्दगी है, इसके उलट हमारी जिन्दगी को ''अल–हयातुद्दुनिया'' कहा गया है, दुनिया के मायने करीब के हैं, ये जिन्दगी या ये घर हमारे सामने है और हमसे करीब है, और दूसरा घर या दूसरी ज़िन्दगी निगाहों से अभी दूर है वही असल और आखिरी ज़िन्दगी है, जिसको आखिरत कहते हैं, ये दुनिया की ज़िन्दगी अल्लाह तआला ने आखिरत की जिन्दगी के लिए बनाई है, और वहां की जिन्दगी की कामयाबी या नाकामी दुनिया की जिन्दगी पर निर्भर है, इसीलिए एक हदीस में ये शब्द आये हुए हैं–

अनुवादः– ***''अद्दुनिया मज़रउल आखिरह'' दुनिया आखिरत की खेती है, इंसान जैसी खेती यहां करेगा वहां उसको उसके मुताबिक बदला मिलेगा,*** ये एक बेहतरीन मिसाल है, जिससे बात समझाई गई है कि जो जितना ज़्यादा रसूले अकरम सल्लल्लाहु के बताए हुए तरीके के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारेगा वह उतना ही ज़्यादा कामयाब करार दिया जाएगा इसीलिए इस दुनिया को ''दारुल इम्तिहान'' (परीक्षास्थल) भी कहा गया है।

आखिरत की इस ज़िन्दगी का यकीन करना और जानना कि इस दुनिया की ज़िन्दगी के बाद जो हमेशा हमेश के लिए होगी और उसमें आदमी को अपने किये के मुताबिक बदला मिलेगा, इस्लाम के तीन बुनियादी अकीदों में से तीसरा अकीदा है जिसको अकीद–ए–आखिरत कहते हैं।

❖❖❖

काम की बात

- **बिस्मिल्लाहः**– हर काम बिस्मिल्लाह पढ़ कर शुरु करो।
- **अलहम्दुलिल्लाहः**–काम पूरा हो गया तो अलहम्दुलिल्लाह कहो।
- **सुब्हानल्लाहः**– तअज्जुब का मौक़ा हो तो सुब्हानल्लाह कहो।
- **इन्शाअल्लाहः**– किसी काम का इरादा करो तो इन्शाअल्लाह कहो।
- **अस्तग़फिरुल्लाहः**– कोई ग़लती हो जाये तो अस्तग़–फिरुल्लाह पढ़ो...।
- **लाहौ–ल–वलाकूव–ता–इल्ला–बिल्लाहः**– शैतानी ख़याल आ जाये तो लाहौल वलाकूव–त इल्ला बिल्लाह पढ़ो।
- **इन्नालिल्लाहि व इन्ना–इलैहि राजिऊनः**– कोई काम बिगड़ जाये तो इन्ना–लिल्लाहि व इन्ना–इलैहि राजिऊन पढ़ो।

❖❖❖

सीरते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मुकम्मल अमल की ज़रूरत

मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी

रबीउल अव्वल के मुबारक मौके पर ईदमीलादुन्नबी की महफिलें सजती हैं बड़े बड़े वक्ताओं के जोशीले भाषण और तक़रीरें होती हैं नातिया मुशायरों का आयोजन होता है और पूरी रात यह सिलसिला जारी रह कर सुब्ह की अज़ान पर समाप्त होता है, लेकिन पूरी रात जाग कर लोग जब अपने घरों को लौटते हैं तो यह नहीं बता सकते कि हुजूर सल्ल0 की घरेलू एवं सामाजिक ज़िन्दगी कैसी थी, वह मेराज का वाकिया बयान कर सकते हैं, गज़व–ए–उहद की तफ़्सीलात बयान कर सकते हैं आप सल्ल0 के मोजिजात पर रोशनी डाल सकते हैं, गारे हिरा में आपकी इबादत की मंजरकशी कर सकते हैं, मक्के से मदीने हिजरत की रूदाद बयान कर सकते हैं इसी प्रकार वह आप सल्ल0 की बहुत सारी बातें बता सकते हैं, लेकिन आप सल्ल0 की घरेलू एवं सामाजिक ज़िन्दगी के बारे में वह बिल्कुल अन्भिज्ञ और खामोश नज़र आते हैं जब कि आप सल्ल0 की जीवनी का वह भाग जो घरेलू एवं सामाजिक जीवन से संबंधित है, मानव जीवन में उसका बहुत महत्व है, इबादात के मामले में आपकी जीवनी वास्तव में हमारी पूरी रहनुमाई करती है बल्कि इबादात को काबले कबूल बनाने में सीरत का बुनियादी किरदार है, लेकिन क्या आप सल्ल0 का सारा समय मस्जिदों में गुज़रा? क्या आप सल्ल0 मानव जीवन की ज़रूरियात से मुक्त थे जो हर एक को पेश आती हैं? क्या आप सल्ल0 ने अपनी ज़िन्दगी का ज़्यादा समय जंगलों और गारों में गुज़ारा जहाँ इन्सानों से वास्ता कम पड़ता है? अगर ऐसा होता तो कुर्आन की यह आयत ''तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल सल्ल0 की ज़िन्दगी में बेहतरीन नमूना है'' बे माना हो कर रह जाती, वास्तव में आपकी ज़िन्दगी में वह समस्त मसायल पेश आये जो किसी भी इंसान को उम्र के किसी भी भाग में पेश आ सकते हैं। आप सल्ल0 का बचपन भी गुज़रा, जवानी भी गुज़री और जवानी के बाद का ज़माना भी गुज़रा, बचपन की ख्वाहिशात, जवानी की ज़रूरतें और जवानी के बाद के मसायल भी आपको पेश आये, रहन सहन और लेन देन के मामले में नबी सल्ल0 ने उम्मत के सामने एक मिसाल कायम की, और एक नमूना पेश कर के दिखा दिया, हमें इन नमूनों को भी सामने लाने की ज़रूरत है।

हम वुजू में, गुस्ल में, पानी पीने में, खाना खाने में सुन्नतों का एहतिमाम करते हैं क्योंकि हमारे प्यारे नबी ने यह सब सिर्फ बताया ही नहीं बल्कि करके दिखाया है लेकिन क्या हुजूर पाक सल्ल0 ने सिर्फ उन्हीं चीज़ों में हमारी रहनुमाई फरमाई है जो हमारी व्यक्तिगत जीवन से संबंध रखती हैं? और क्या आप सल्ल0 ने सिर्फ उन्हीं चीज़ों के सिलसिले में हमें हिदायात फरमाई हैं जिन्हें इबादात कहा जाता है?

क्या आप सल्ल0 ने घर में रहने के आदाब नहीं बताए? क्या आप सल्ल0 ने सड़क पर चलने का तरीक़ा नहीं बताया? क्या आप सल्ल0 ने रास्ते पर खड़े रहने वालों पर कुछ ज़िम्मेदारियाँ नहीं डालीं? क्या पड़ोसियों के साथ अच्छे व्यवहार

की तालीम आप सल्ल0 ने नहीं दी? क्या रास्ते से तकलीफ़ पहुँचाने वाली चीज़ हटाने को सदक़ा (सवाब का काम) नहीं कहा? क्या किसी बीमार की इयादत की फ़ज़ीलत के सिलसिले में ज़बाने नबूवत खामोश है? क्या मुसलमान भाई से मुस्कुरा कर मिलना अज्र व सवाब का सबब नहीं है? क्या विनम्रता, सहन शीलता, शालीनता उच्च कोटि के नबवी सिफात एवं गुण नहीं हैं?

माँ–बाप के साथ सदा अच्छे बरताव की ताकीद किसने फुरमाई? बीवी के हुकूक अदा करने पर किसने ज़ोर दिया? अनाथों, असहायों और विधवावों की देख भाल करने पर किसने खुशखबरी सुनाई? अमानतदार कारोबारी के लिए प्रलोक की गर्मी में अल्लाह के अर्श के साये का वादा किसने किया, गीबत, चुगल खोरी, इल्जाम तराशी और ऐब लगाने को बदतरीन गुनाह किसने करार दिया? झूठ ख्यानत, और वादा खिलाफी को निफ़ाक़ (पाखण्ड) की अलामतों में किसने शुमार किया?

ज़रा सोचिए! आप सल्ल0 की ज़िन्दगी में खुशी के मौक़े भी आये और गम के भी, आप सल्ल0 ने अपनी चहेती बेटियों को दुलहन बना कर विदा भी किया और अपने लख्ते जिगर हज़रत इब्राहीम रज़ि0 को अपने हाथों से क़ब्र में भी उतारा, आप सल्ल0 ने मैदाने जंग में इस्लामी लश्कर को आगे बढ़ते भी देखा और पीछे हटते हुए भी, सुलह के वाक़ियात भी आप सल्ल0 की ज़िन्दगी में पेश आए और जंग के भी, आपने जान छिड़कने वाले सहाबा रज़ि0 की मुहब्बत भी देखी और खून के प्यासे दुश्मनों की दुश्मनी भी, आप सल्ल0 ने माफ करके भी दिखाया और चेतावनी दे कर भी, आप सल्ल0 ने बचाव भी किया, और अटेक भी, आप सल्ल0 ने खुद भूखे रह कर दूसरों को खिलाने का सबक दिया, आप सल्ल0 ने अपने रिश्तेदारों को वंचित रख कर दूसरों को नवाज़ने का नमूना पेश किया, पसीना सूखने से पहले मज़दूर को उसकी मज़दूरी देने का उपदेश दिया, महिलाओं के साथ विन्रमता अपनाने का आदेश दिया, अमीर की आज्ञाकारिता अनिवार्य कर दी।

आप सल्ल0 की मज्लिस में सिर्फ इल्म, अमानतदारी हया सच्चाई, सब्र पर बातें होती थी, किसी की गीबत, किसी पर इल्ज़ाम न लगाया जाता था, वहां हर बड़ा सम्मानीय था और हर छोटा कृपा पात्र।

जरा आप सल्ल0 के घर पर नज़र डालिए सिर्फ एक कमरा है और वह भी इतना तंग की आप सल्ल0 नमाज़ पढ़ते तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 अपने पाँव नहीं फैला सकती थीं इसीलिए हदीसों में आता है कि जब तक आप सल्ल0 कियाम में या रुकूअ़ में होते तो हज़रत आयशा रज़ि0 पाँव फैलातीं और जब सज्दे में जाते तो हज़रत आयशा रज़ि0 अपना पाँव समेट लेतीं, तब आप सजदा फरमाते, इतना तंग मकान और इतनी तंग आरामगाह थी, घर में फर्नीचर के तौर पर सिर्फ दो चीजें थी एक तख्त और एक कुर्सी, वह भी बहुत मामूली।

दरवाजे पर पर्दा ज़रूर था लेकिन वह भी बहुत मामूली, वह मकान की ज़ीनत और साज सज्जा बढ़ाने के लिए नहीं सिर्फ इसलिए कि अचानक दरवाज़ा खुलने पर बेपरर्दगी न हो, और अगर दरवाज़े पर कोई खड़ा हो जाये तो सामना न हो।

मस्जिदे नबवी में आप सल्ल0 आराम फरमाँ हैं आपके जिस्मे मुबारक के नीचे खजूर की एक चटाई है, न सर के नीचे कोई तकिया है न चेहरे अनवर के नीचे कोई चादर, खजूर की इस सख़्त और खुर्दरी चटाई के निशानात आप सल्ल0 के चेहरे पर साफ नज़र आ रहे हैं हज़रत उमर रज़ि0 आपको इस हाल में लेटा देखते हैं तो आँखों में आँसू भर आते हैं और फरमाते हैं! ऐ

अल्लाह के रसूल! आप अल्लाह के महबूब हो कर इतनी सख्त और खुर्दुरी चटाई पर लेटे हैं कि आपके चेहरे पर निशानात पड़ गये हैं जब कि कैसर–किसरा (रूम व ईरान के बादशाहों की उपाधि) नर्म व मखमली गद्दों पर आराम कर रहे हैं तो आप सल्ल0 ने फरमायाः उनके लिए सिर्फ दुनिया है और हमारे लिए आखिरत।

घर में आप सल्ल0 का वक़्त कैसे गुज़रता था? वह भी हज़रत आयशा रज़ि0 की ज़बानी सुनिए– फरमाती हैंः आप सल्ल0 सख्त मिज़ाज शौहर की तरह नहीं थे, अपने कपड़े खुद ही सी लेते, खुद ही अपनी चप्पल टाँक लेते, खुद बकरी का दूध दूह लिया करते थे, और घर में आप सल्ल0 उसी प्रकार का काम काज कर लेते थे जिस प्रकार दूसरे तमाम मर्द अपने घरों मे काम करते हैं, आप सल्ल0 फरमाया करते थे, तुममें सबसे बेहतर वह है जो अपने घर वालों के लिए सबसे बेहतर हो, और मैं अपने घर वालों के लिए तुम सबसे बेहतर हूँ।

बच्चों के साथ आप सल्ल0 का व्यवहार इतना प्रेमपूर्ण होता था कि बच्चे आप सल्ल0 के आशिक हो जाते थे, बच्चों से आप सल्ल0 प्यार फरमाते, खुद ही उनको सलाम करते, उनके सरों पर हाथ फेरते, उनके मध्य कभी कभी मुकाबला करा देते, जब आप सल्ल0 सफ़र से वापस तशरीफ लाते तो घर के बच्चे आप सल्ल0 का इस्तेकबाल करने दौड़ते, आप किसी को प्यार करते, किसी को अपनी सवारी पर पीछे बैठा लेते, किसी को हाथों पर उठा लेते और गोद में ले लिया करते।

गरीबों कमज़ोरों बीमारों से मिलने आप सल्ल0 खुद जाते, और उनको तसल्ली देते, उनकी तकलीफें दूर करने की पूरी कोशिश करते, उनकी परेशानियों और तकलीफों पर अल्लाह की ओर से अज्र व सवाब की उम्मीद दिला कर उनके एहसासात को बदलने की कोशिश करते।

आप सल्ल0 ने उस वलीमे को बहुत बुरा वलीमा कहा है जिस वलीमे में अमीरों को तो दावत दी जाये और गरीबों और कमज़ोरों को नज़र अंदाज़ कर दिया जाए, आप सल्ल0 ने फरमाया कि मैं मिस्कीनों से मुहब्बत करता हूँ।

इसी प्रकार तायफ के सफर के हालात पढ़िए, आप सल्ल0 आगे हैं और पीछे कुफ़्फ़ार के लगाए हुए शरपसंद औबाश लड़के, पत्थर आप पर बरसाये जा रहे हैं, जुम्ले आप पर कसे जा रहे हैं आपके पाँव मुबारक खून से लतपत हो चुके हैं, दिल की कैफियत का तो पूछना ही क्या, लेकिन ज़बान पर ऐसा क़ाबू और जज़बात पर ऐसा कंट्रोल की अक़्ल हैरान रह जाए, न ज़बान से कोई सख़्त लफ़्ज़ निकलता है और न बददुआ के लिए हाथ उठता है फरिश्ते मुंतजिर हैं कि इजाजत हो तो पहाड़ों को मिला कर इन शरकशों का सुर्मा बना दिया जाए, लेकिन इस मौक़े पर भी ज़बान मुबारक से मुहब्बत में डूबे शब्द ही निकलते हैं ''ऐ अल्लाह मेरी कौम को हिदायत अता फरमा वह नहीं जानती''।

मक्के पर विजय पताका लहराया जा रहा है, दुश्मन से बदला लेने का इससे बेहतर कोई मौक़ा नहीं, तलवारें इशारे की मुंतजिर हैं, कब से आरजू थी कि अल्लाह व रसूल के नाफरमानों के सर कलम करने का मौका हाथ आये, लेकिन ऐलान होता है आम माफी का, तलवारों का सर झुक जाता है और उनको नियाम में वापस आना पड़ता है।

और आगे बढ़िए, तलवार को छोड़िए, तलवार तो बड़ी चीज़ है, आप सल्ल0 के विरोधी व जानी दुश्मन भी आज तक यह भी साबित न कर सके कि आप सल्ल0 के किसी दुश्मन को आप सल्ल0 के किसी शब्द

से तकलीफ हुई है। अपने और पराये सबका इस बात पर इत्तेफाक़ है कि न आप सल्ल0 ने किसी नौकर को मारा, न किसी महिला पर हाथ उठाया, और न किसी बच्चे को डाँटा, इंसान को छोड़िए जानवरों तक से आप सल्ल0 ने अच्छा बरताव करने का हुक्म दिया, दूध दूहने वाले से कहा कि अपने नाखुन काट लिया करो ताकि दूध दूहते समय वह जानवर के थन में न धसें, इसी प्रकार दूसरे जानवरों के सथ भी नर्मी करने का हुक्म दिया और फरमाया इनके साथ की जाने वाली ज़ियादतियों पर भी कयामत में सवाल होगा।

आज के इस समाज में सीरत पाक के इन नमूनों को भी सामने लाने की ज़रूरत है, और जब तक ज़िन्दगी के हर मैदान में सीरते रसूलुल्लाह सल्ल0 के नमूनों को नहीं अपनाया जायेगा उस वक़्त तक मुकम्मल दीन हमारी ज़िन्दगी में नहीं आ पायेगा इसी को कुर्आन ने कहा है ''दाखिल हो जाओ ईमान में पूरे–पूरे'' दूसरी जगह इरशाद हैः तुम को हुजूर सल्ल0 की ओर से जो भी आदेश मिले उसको पूरा करो और जिस काम से आप सल्ल0 ने मना फरमाया रुक जाओ, यही दरअस्ल रबीउल अव्वल का पैग़ामा है।

❖❖❖

जाग हे भारतवासी जाग

–हसनैन कैफ नवगांवी

हिंसा की घनघोर घटा है
मानवता का खून हुआ है
दिल का सुख और चैन लुटा है
डसते हैं नफरत के नाग
चारों ओर लगी है आग
जाग हे भारतवासी जाग।

उधर हैं कुछ सरमायादार
इधर करोड़ों हैं नादार
भूखों, नंगों की यलगार
आँखें शोले, मुँह में झाग
चारों ओर लगी है आग
जाग हे भारतवासी जाग।

इन्सानों को मार रहे हैं
शासन को ललकार रहे हैं
भारत में फुंकार रहे हैं
नस्लवादी काले नाग
चारों ओर लगी है आग
जाग हे भारतवासी जाग।

जात–पात के झगड़े कब तक
आतंकवादी हमले कब तक
धर्म के नाम से दंगे कब तक
देश के कैसे फूटे भाग
चारों ओर लगी है आग
जाग हे भारत वासी जाग।

एक ख़ुदा के सब बंदे हैं
एक आदम के सब बेटे हैं
फिर आपस में क्यों लड़ते हैं
''कैफ'' प्रेम का छेड़ो राग
चारों ओर लगी है आग
जाग हे भारत वासी जाग।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

हिन्दुओं की कुछ अनुचित रीतियों का बचावः–

अल बैरूनी के न केवल इन निष्कर्षों से बल्कि उसकी उपरोक्त किताब की हर पंक्ति से उसकी दरियादिली और निष्पक्षता का प्रकटीकरण होता है। उसको पढ़ते समय यह बिल्कुल महसूस नहीं होता कि वह अपने धर्म की बड़ाई की भावना के साथ हिन्दुओं की धार्मिक, बौद्धिक और सामाजिक जीवन का अध्ययन कर रहा है। बल्कि ऐसा मालूम होता है कि वर्तमान युग का कोई शोधकर्ता अपनी निष्पक्षता से हर बात को जाँच–परख कर लिखने की कोशिश कर रहा है। उदाहरण के रूप में एक जगह वह लिखता है कि हम सुना करते थे कि जो हिन्दू अधीन इस्लामी देशों से भाग कर अपने देश और धर्म में वापस जाता है तो प्रायश्चित के रूप में उस पर व्रत अनिवार्य किया जाता है और गाय के गोबर और पेशाब और दूध में कुछ दिन तक उसको गाड़ दिया जाता है, यहाँ तक कि उसमें खमीर उठ आती है, उस समय गंदगी से निकाल कर उसको उसी तरह की वस्तुएँ जिनमें गाड़ा गया था, खिलायी जाती हैं। इस सुनी हुई रिवायत से अल बैरूनी को दुख हुआ। इसीलिए उसने उस पर शोध किया। जिसके बाद वह लिखता है कि इस तरह की दूसरी बातें भी हमने सुनी थीं। हमने उनके सम्बन्ध में ब्राह्मणों से पूछा, उन्होंने इन्कार किया और कहा कि इसके लिए न कोई प्रायश्चित है और न उसकी पिछली दशा से आने की अनुमति है और यह क्यों हो सकता है। इसलिए कि ब्राह्मण कुछ दिनों शूद्र के घर में खाना खा लेता है तो अपने स्तर से गिर जाता है और उसमें कभी वापस नहीं आ सकता।

अल बैरूनी की निष्पक्षता की प्रशंसाः–

अल बैरूनी की किताब में हिन्दुओं के धार्मिक, बौद्धिक और सामाजिक परिस्थितियों के अध्ययन में प्यार और मोहब्बत और समझबूझ का जो खुशगवार वातावरण है, उससे प्रभावित हो कर प्रोफ़ेसर सुनिती कुमार चटर्जी ने लिखा है किः

वह अपने धार्मिक विश्वास के कारण अच्छे लोगों की उपलब्धियों की अनदेखी करना पसंद नहीं करता था, जो दूसरे माहौल और वातावरण में फले और फूले। इसकी यह उदारता, निष्पक्षता बल्कि खरापन ऐसा गुण है जिसके लिए हिन्दुओं को उसका कृपापात्र होना चाहिए और ज्ञान की दुनिया भी उसका आभार प्रकट करती है कि उसकी अच्छाई उसकी योग्यता और विद्वता इससे अधिक मूल्यवान है।

अल बैरूनी क़ौमों की आपसी दूरी और परायापन को एक दूसरे के लिए बहुत हानिकारक समझता रहा। उसका यह समझना बहुत उचित था। क्योंकि एक दूसरे की जानकारी न होने से परायापन पैदा होता है। परायापन आँखों को अंधा और कानों को बहरा कर देता है जिससे व्यक्तिगत, नस्लीय और सामुदायिक और क़ौमी स्वार्थ पैदा होता है। इसके बाद दिल दुखाना, मनुष्यों से दूरी, अपमान और खून बहाना भी आरम्भ हो जाता है जिसको क़ौमी खुशहाली का नाम दे दिया जाता है। अल बैरूनी ने अपनी किताब

के पहले अध्याय के आरम्भ में ही लिखा है कि परायापन की स्थिति में जो चीज़ नहीं मालूम हो सकती है, वह मेल–जोल की स्थिति में मालूम हो जाती है। इस मेल जोल के वातावरण के पैदा करने के लिए उसने बहुत मेहनत और संघर्ष से किताबुल हिन्द लिखी। यदि हिन्दू और मुसलमान दोनों में हर ज़माने में एक–एक बैरूनी पैदा होते रहते तो आज हिन्दुओं का इतिहास कुछ और होता।

शहाबुद्दीन ग़ौरी की उदारताः–

ग़ज़नवियों के बाद हिन्दुस्तान में ग़ौरी आए। शहाबुद्दीन ग़ौरी की तलवार मुल्तान, अन्नहलवाड़ा, सियालकोट, भटिंडा और तराईन आदि में अवश्य चमकी लेकिन उसी के जीवन की घटनाओं में यह घटना भी विचार करने योग्य है कि जब नहरवाला अर्थात अनहलवाड़ा की विजय में असफल रह कर ग़ज़नी में रह रहा था और अपनी पराजय का बदला लेने के लिए युद्ध की तैयारियों में व्यस्त था कि किसी ने प्रार्थना पत्र लिख कर भेजा कि नहरवाला में एक प्रसिद्ध सौदागर है जिसका नाम वसाला अबहर है। वह सदैव लाखों का माल व्यापार के उद्देश्य से उन क्षेत्रों में भिजवाया करता है। अतः इस वक़्त भी उसका दस लाख के लगभग का माल ग़ज़नी में आया हुआ है। यदि बादशाह सलामत चाहें तो उस माल को ज़ब्त करके अपने ख़ज़ाने में भिजवाया जा सकता है। इससे न केवल ख़ज़ाना भर जाएगा बल्कि शाही शान–शौकत में वृद्धि होगी, सुल्तान ने प्रर्थना पत्र के पिछले पृष्ठ पर लिख दिया किः

''वसाला अबहर का यह माल अगर नहरवाला में होता और वहाँ उस पर अधिकार किया जाता तो हमारे लिए हलाल होता। लेकिन ग़ज़नी में इस माल पर अधिकार करना हमारे लिए हराम है, क्योंकि वह मेरी शरण में है''।

यह किताब जवामेउल हिक़ायात व लवामेउल रिवायात अपनी कहानियों की रंगारंगी विलक्षणता, आकर्षण और सच्चाई के कारण बहुत प्रसिद्ध और लोकप्रिय है। उसकी कुछ कहानियाँ ऐतिहासिक साहित्य की हैसियत रखती हैं, शमसुद्दीन अल्तमश के युग में यह शुद्ध रूप से नैतिक दृष्टिकोण से लिख गयी हैं जिसमें हर तरह के उच्च नैतिक आदर्श जैसे न्याय, लज्जा, आतिथ्य, क्षमा, विद्या, शालीनता, साहस, दया, त्याग, दान, उदारता, धैर्य, आभार, संघर्षशीलता, खामोशी, बोलना, वफ़ादारी, अमानतदारी आदि के शिक्षाप्रद पहलुओं का स्पष्टीकरण, कहानियों के रूप में किया गया है। यह चार खण्डों में 100 अध्यायों पर आधारित है। इसमें 2113 कहानियाँ हैं।

हिन्दू राजाओं की प्रशंसा उस ज़माने की एक किताब में:–

गुलाम वंश के सुल्तान अपनी सैन्य कौशल का जौहर अपने सल्तनत का दायरा बढ़ा कर तो अवश्य दिखा रहे थे। इससे कौन इंकार कर सकता है कि उनकी सैन्य शक्ति उनके लिए गर्व का विषय रही, लेकिन यहाँ के नागरिक उनकी विजय पाने वाली तलवारों से अवश्य भयभीत रहे। लेकिन उसी ज़माने में सदीदुद्दीन मुहम्मद औनी अपनी किताब जवामेउल हिक़ायात व लमावेउल रिवायात में नहरवाला के एक हिन्दू राजा जयसिंह की न्यायप्रियता और धार्मिक उदारता और दूसरे गौरपाल नामक राजा के ऊँचे चरित्र और उसी शहर के हिन्दू सौदागरों की दयानतदारी के आकर्षक इतिहास की कहानियों को सुना कर अपने धर्म के लोगों को यहाँ के लोगों से मानो मिलने–जुलने का निमंत्रण दे रहा हो। यह कहानियाँ

तो ऐसी हैं जो आपसी एकता और प्रेम पैदा करने के लिए पाठ्यक्रम में सम्मिलित की जा सकती हैं। उन्हीं में से एक कहानी का सारांश यह है कि खंभात की एक जामा मस्जिद को हिन्दुओं ने नुक़सान पहुँचाया। मस्जिद के ख़तीब ने नहरवाला के शासक राय जयसिंह के पास पहुँच कर उसकी फ़रियाद करनी चाही लेकिन दरबारियों ने उसको राजा के पास नहीं पहुँचने दिया। ख़तीब अवसर पाकर राजा के पास उस समय पहुँचा जब वह शिकार खेलने जा रहा था। उसने अपनी आप बीती सुनायी, राजा शिकार से वापस आया तो कई दिन तक भूमिगत रहा। इस दौरान भेष बदल कर खंभात पहुँच गया और सबसे पूछ–गछ की। सबकी जुबान से उसको यही मालूम हुआ कि मुसलमानों के साथ अत्याचार किया गया है। इस जाँच–पड़ताल के बाद अपनी राजधानी में वापस आया। ख़तीब को दरबार में बुलवाया। याचिका प्रस्तुत हुई तो दरबारियों ने उसको झुठलाने की कोशिश की। लेकिन राजा ने अपनी व्यक्तिगत जाँच का विवरण सुनाया। फिर उसने आदेश दिया कि खंभात के ब्राह्मणों पाइकों और पारसियों के सरदारों को दण्ड दिया जाए और अपनी ओर से एक लाख बालूतरे (उस ज़माने के सिक्के) दिए कि मस्जिद और मीनार नये सिरे से तैयार किए जाएं। ख़तीब को चार छत्र दिए जो बहुत मूल्यवान और रंगीन रेशमी कपड़े से तैयार किए गए थे।

सदीदुद्दीन औनी ने नहरवाला के एक अन्य हिन्दू राजा के चरित्र की पवित्रता की घटना बयान करके मानो इसका उपदेश दिया है कि इसके चरित्र की महानता दूसरे शासकों के लिए अनुकरणीय आदर्श हो सकती है। उसके कथन के अनुसार नहरवाला का एक राजा गौरपाल बहुत ही न्यायप्रिय, नेक और बुद्धिमान था। सिंहासन पर बैठने से पहले वह वर्षों तक साधुओं के साथ रह चुका था। इसलिए उसमें बहुत सी अच्छाईयाँ पैदा हो गयी थीं। राज मिलने के बाद एक दिन वह हाथी पर सवार हो कर कहीं जा रहा था। एक सुन्दर धोबिन पर उसकी नज़र पड़ी। उसको देख कर उसकी वासना जाग उठी। उसने हाथी उसकी ओर बढ़ाया, लेकिन अचानक उसको याद आया कि परायी औरत से मिलने का विचार बड़ा पाप है। इस विचार के आते ही वह अपने महल में वापस आया, ब्राह्मणों को बुलवाया, उनसे कहा कि मैं लकड़ियाँ एकत्र करके आग जलाऊँगा और जल मरूँगा। ब्राह्मणों ने पूछा, ''आपने ऐसा कौन सा पाप किया है।'' राजा ने धोबिन पर बुरी दृष्टि डालने की घटना सुनायी तो ब्राह्मणों ने निर्णय दिया कि निःसंदेह राजा के लिए प्रजा की बहू–बेटियों को बुरी नज़र से देखना बड़ा पाप है। इसके बाद आग जलायी गयी। राजा आग में कूदने के विचार से आगे बढ़ा तो ब्राह्मणों ने उसका दामन थाम लिया और बोले बस कीजिए महाराज! आपका पाप मिट चुका, आपने उसका बदला चुका दिया, क्योंकि जो कुछ पाप किया आपके मन ने किया, शरीर ने नहीं किया, आपका शरीर यदि पाप करता तो हम उसे जला देते। चूंकि मन ने पाप किया था और वह अब तक बुराई के एहसास की आग में जलता रहा है, इसलिए उसका दण्ड समाप्त हुआ। ब्राह्मण राजा को आग के पास से हटा ले गए, फिर भी राजा ने अपने आपको धोने के लिए एक लाख बालूतरे दान किए।

.....जारी.....

❖❖❖

ऐ नामे मुहम्मद सल्ले अला

माहिरुल क़ादरी

कुछ कुफ़्र ने फ़ितने फैलाये, कुछ जुल्म ने शोले भड़काए
सीनों में अदावत जाग उठी इन्सान से इनसाँ टकराए
पामाल किया, बरबाद किया, कमज़ोर को ताक़त वालों ने
जब जुल्मो सितम हद से गुज़रे तशीरफ मुहम्मद ले आए
रहमत की घटाएं लहराईं, दुनिया की उम्मीदें बर आईं
इकरामो अता[3] की बारिश की, अख़लाक़ के मोती बरसाए
तहज़ीब की शमएं रोशन कीं, ऊँटों के चराने वालों में
काँटों को गुलों की क़ीमत दी, ज़र्रों के मुक़द्दर चमकाए
अल्लाह से रिश्ते को जोड़ा, बातिल के तिलिस्मों को तोड़ा
ख़ुद वक़्त के धारे को मोड़ा, तूफाँ में सफ़ीने तैराए
तलवार भी दी, कुरआँ भी दिया, दुनिया भी अता की, उक़बा भी
मरने को शहादत फ़रमाया, जीने के तरीक़े समझाए
मक्के की ज़मी और अर्श कहाँ, दम भर में यहाँ, पल भर में वहाँ
पत्थर को अता की गोयाई और चाँद के टुकड़े फ़रमाए
मज़लूमों की फ़रयाद सुनी, मजबूरों की ग़मख़ुवारी की
ज़ख़्मों पे ख़ुनुक मरहम रखे, बेचैन दिलों के काम आए
औरत को हया की चादर दी, ग़ैरत का ग़ाज़ा भी बख़शा
शीशों में नज़ाकत पैदा की, किरदार के जौहर चमकाए
तौहीद का धारा रुक न सका, इस्लाम का परचम झुक न सका
कुफ़्फ़ार बहुत कुछ झुंझलाए, शैताँ ने हज़ारों बल खाए
ऐ नामे मुहम्मद सल्ले अला, माहिर के लिए तो सब कुछ है
होटों पे तबस्सुम भी आया, आँखों में भी आँसू भर आए

❖❖❖

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरे विश्व के लिए नैतिकता के स्रोत

इं0 जावेद इक़बाल

रसूले अकरम हजरत मुहम्मद सल्ल० केवल इतना ही नहीं कि अल्लाह के रसूल हैं बल्कि वह तो नबियों का सिलसिला समाप्त करने वाले ''खातमुन्नबिय्यीन'' की महत्त्वपूर्ण उपाधि से सुशोभित रसूल हैं। अल्लाह तआला ने अपने इस फैसले का ऐलान कुरआन पाक की सूरः नं०–33 की आयत नं० 40 में फरमा दिया है। दिलचस्प बात है कि भारतीय ईशवाणी समझे जाने वाले ग्रन्थ ऋग्वेद के मंत्र संख्या 1:163:1 में आप सल्ल० का जिक्र ''स मुद्रा दूत अर्बन'' शब्द से किया गया है। जिसका अर्थ होता है, ''दूतों के सिलसिले पर मुहर लगा देने वाला अरब का दूत''।

अंतिम होने के साथ–साथ आप सल्ल० की दूसरी विशेषता यह भी है कि आप सल्ल० को कयामत के दिन अल्लाह की तारीफ (लिवाउल–हम्द) का झंडा दिया जाएगा और सभी नबी व रसूल आप सल्ल० के झंडे तले होंगे। स्पष्ट है कि झंडा सेना के सरदार के हाथ में दिया जाता है। लिहाजा आप सल्ल० आदम से लेकर ईसा अलैहिस्सलाम तक सभी नबियों के सरदार भी हैं। इस हकीकत का बयान भी हमें ईशवाणी समझे जाने वाले यजुर्वेद ग्रंथ के अध्याय 7 श्लोक 41 में मिलता है, कहा गया है कि वह झंडा धारक हैं पैदायशी ज्ञानी हैं और संसार में सूर्य के समान प्रकाशवान नज़र आता है।

झंडा तो आप सल्ल० के हाथों में इस दुनिया में रहते हुए भी नजर आता है तभी तो दुनिया के बड़े बड़े दार्शनिकों ने दूसरे धर्म को मानते हुए भी हज़रत मुहम्मद सल्ल० की महिमा का गुणगान किया है और आप सल्ल० को दुनिया के महानों में महान घोषित किया है।

1978 में न्युयार्क से प्रकाशित पुस्तक *"The Hundred"* में इस के लेखक डॉ0 माइकल हार्ट ने एक ईसाई धर्म से होते हुए भी, दुनिया को सब से ज़्यादा प्रभावित करने वाले 100 महापुरुषों की सूची में हज़रत मुहम्मद सल्ल० को प्रथम स्थान दिया है और लिखा है किसी को आश्चर्य हो या किसी को आपत्ति हो मगर यह एक हकीकत है कि मुहम्मद दुनिया का एक मात्र व्यक्ति है जो धार्मिक और सामाजिक दोनों ही क्षेत्रों में समान रूप से सफल हुआ।

विक्टोरियन युग के एक अन्य महान दार्शनिक एवं इतिहासकार थामस कार्लाइल ने अपनी पुस्तक *"Heroes & Heroworship"* में हज़रत मुहम्मद सल्ल० के बारे में लिखा है कि मुहम्मद के बारे में कही जाने वाली अनेकानेक झूठी बातें स्वयं हमारे लिए शर्म का कारण हैं वह तो उन महान व्यक्तियों में से थे जिनकी महानता को कोई दूसरा नहीं पा सकता, उन्होंने अकेले ही केवल दो दशकों के भीतर लड़ाकू कबीलों और जाहिल बद्दुओं को बेहद सभ्य और कुशल कौम में बदल दिया।

हम तो कहेंगे कि हजरत मुहम्मद सल्ल० ने केवल अरब कौम को ही नहीं बल्कि दुनिया की सभी कौमों को बदलने का मार्ग खोल दिया।

उस समय की दुनिया पर नजर डालने पर पता चलता है कि योरोप हो या ईरान या भारतीय उपमहाद्वीप, सभी द्वीप महाद्वीप गहरे अंधकार में डूबे

हुए थे। नैतिक मूल्यों का पूर्ण रूप से हनन हो चुका था, हुकूमतें अवाम को बे रोक टोक लूटने में लगी हुई थीं, हर व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा माल लूट कर अपनी मनमानी इच्छाओं की पूर्ति में लगा हुआ था। वैवाहिक बंधनों को छोड़कर आजादाना यौन संबंध स्थापित किए जाते थे,उपभोग की अन्य वस्तुओं की तरह महिलाओं को भी खरीदा और बेचा जाता था, समाज में न उनका कोई सम्मान था और न आधिकार, सम्पत्ति में हिस्सेदारी की बात तो सोची भी नहीं जा सकती थी। भारत में तो पति के मरने पर उसकी चिता के साथ ही पत्नी को ज़िंदा जला दिया जाता था, इस क्रूरता का अंत कुछ समाज सुधारक संस्थाओं के द्वारा आजादी से कुछ पहले ही किया जा सका है। और इस की प्ररेणा मिली मुहम्मद सल्ल० की तालीमात से। क्योंकि आप सल्ल० ने महिलाओं को बराबरी का दर्जा दिया था, फरमाया था कि महिला अपने घर में पति और बच्चों पर निगरां है। दूसरी कौमों ने मुसलमानों के संम्पर्क में आने पर हज़रत मुहम्मद सल्ल० की तालीमात को जाना, उनके महत्व को समझा तो कभी सोच समझ कर और कभी अनजाने में उन को स्वीकार कर लिया।

हजरत मुहम्मद सल्ल० के आने से पहले धरती और आकाश के बीच हर वह चीज जो इंसान के लिए लाभदायक थी और हर वह चीज जो हानिकारक हो सकती थी, देवी–देवताओं के समान थी और निःसंकोच पूजी जाती थी। उन्हें किसी न किसी दर्जे में भगवान समझ लिया गया था। भारत में तो आज भी 33 करोड़ देवी देवताओं की मान्यता है।

अतः ऐसी किसी भी चीज पर वैज्ञानिक दृष्टि से नजर डालना और उनके विषय में कोई खोज बीन करना गुनाह समझा जाता था। यही वजह है कि इटली के एक दार्शनिक एवं गणित के विद्वान *Giordano Brunoe* के अनुसंधान कार्यों को अफवाह करार दे कर कैथोलिक चर्च ने मौत की सजा सुनाई थी। सारांश यह कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आने के लगभग 900–1000 साल बाद तक कुछ ऐसी ही स्थिति रही। जब इस्लामी देशों में स्कूल कालेज और यूनिवर्सिटियां स्थापित हो गई, तो योरोपीय देशों के युवा वहां शिक्षा प्राप्ति के लिए आने लगे। शिक्षा के प्रति उनके शौक और लगन के नतीजे में अल्लाह ने भी उन्हें खूब नवाजा।

16वीं शताब्दी के बाद से तो योरोप में वैज्ञानिकों, गणितिज्ञों, खगोल शास्त्रियों, इत्यादि की जैसे बाढ़ सी आ गई।

यह सब संभव कैसे हुआ? हज़रत मुहम्मद सल्ल० की तालीमात का असर था, और अल्लाह तआ़ला का मंसूबा था कि सृष्टि के राज तेजी के साथ खुलना शुरू हो गए। कुरआन में बार बार सृष्टि की प्रत्येक रचना पर गौर–फिक्र करने का आह्वान किया गया है।

आजकल वृक्षारोपण का महत्व दुनिया की समझ में आया है तो इस पर बहुत जोर दिया जा रहा है, मगर हजरत मुहम्मद सल्ल० ने 14 सौ साल पहले ही वृक्षारोपण के महत्व को समझा दिया था। फरमाया था कि यदि तुम कोई पौधा लगा रहे हो और कयामत आजाए (यानि कोई संकट आ जाए) तो भी अपना काम पूरा कर लेना। और इसका फायदा यह बताया कि इस वृक्ष का फल चाहे मनुष्य खाए या कोई पशु खाए लगाने वाले को इसका सवाब मिलेगा।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० की तालीमात की एक विशेषता यह है कि इस जीवन के हर भले काम को आखरित के सवाब से जोड़ कर समझाते हैं।

जबकि इस्लाम के न मानने वाले विरोधियों की केवल इस दुनिया के लाभ–हानि पर ही नज़र होती है, इसी से स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें आखरित पर यकीन नहीं है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० की तालीमात ने केवल अरब के उजड, लड़ाकू, असभ्य समाज को मुहब्बत, इंसाफ, हमदर्दी और शिक्षा के शिखर पर नहीं पहुंचाया बल्कि दुनिया में जहां जहां आप के अनुयाई पहुंचे, उनके उच्च कोटि के चरित्र को देख कर वहां वहां के समाज में जाने अनजाने परिवर्तन आता गया।

आप सल्ल० की तालीमात के कुछ नमूनेः–

जो व्यक्ति तीन बातों का ध्यान रखेगा उस पर अल्लाह अपनी कृपा का हाथ रखेगा और उसको स्वर्ग में दाखिल करेगा।

1. माता पिता से प्रेमपूण व्यवहार
2. निर्बलों–निर्धनों के साथ नरमी
3. अल्लाह उस पर दया नहीं करेगा जो दूसरों पर दया नहीं करता।

० वह व्यक्ति सच्चा ईशभक्त नहीं है जो स्वयं तो पेट भर कर खाए और उसका पड़ोसी भूखा रहे।

० जो व्यक्ति झूठी कसम खा कर माल बेचता है, कयामत के दिन अल्लाह उसकी ओर देखेगा भी नहीं।

० जिसने चालीस दिन तक खाद्य पदार्थों को भंडार में रोके रखा और लोग भूख से तड़पते मरते रहे, उसका अल्लाह से कोई वास्ता नहीं, न ही अल्लाह को उसकी कोई चिन्ता।

अंत में केवल इतना कहना प्रर्याप्त होगा कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० जो महत्वपूर्ण संदेश लेकर आए थे वह किसी एक कौम वर्ग, जाति या क्षेत्र के लिए नहीं था, वह तो सम्पूर्ण मानव जाति के लिए अर्थात पूरे विश्व के लिए है और सदैव के लिए है। इसीलिए तो हज़रत मुहम्मद सल्ल० का एक उपनाम ''रहमतुल लिल आलमीन'' है जिसे हम हिन्दी भाषा में ''जगत हितैषी'' भी कह सकते हैं।।

❖❖❖

अपने पाठकों से

- ० सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- ० हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- ० आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हों, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- ० आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- ० आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- ० **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: पेट्रोल से कपड़ों की धुलाई दुरुस्त है या नहीं?

उत्तर: पेट्रोल में अगर अलग से कोई नजासत न मिले तो पेट्रोल से मैले कपड़ों की धुलाई दुरुस्त है, अलबत्ता नजिस कपड़ों की धुलाई उसी वक़्त दुरुस्त होगी जब यकीन हो जाए कि पेट्रोल से नजासत दूर हो जाएगी।

प्रश्न: मस्जिद की दीवार पर या मेहराब में पवित्र कुर्आन की आयतें लिखना या नक़्श कराना कैसा है?

उत्तर: यह अमल अच्छा नहीं है, क्योंकि दीवार या मेहराब गिरने की सूरत में बे अदबी का अन्देशा है।

प्रश्न: तिलवात करने में सज्दे की आयत पढ़ कर आगे बढ़ जाना कैसा है?

उत्तर: किसी सूरः को पढ़ना और खासतौर से सज्दे की आयत छोड़ देना मकरूह है, अलबत्ता अगर लोग सुन रहे हों और वुज़ू से न हों तो सजदे की आयत आहिस्ता से पढ़ ले ताकि वह सज्दा न करने के गुनाह से बच जाएं।

प्रश्न: ग़ैर मुस्लिम के बरतनों में खाना पीना कैसा है?

उत्तर: अगर ऐसा लगे कि उस बरतन में हराम चीजें जैसे सुअर का गोश्त इस्तेमाल किया गया है तो उसे अच्छी तरह साफ पाक करके इस्तेमाल कर सकते हैं लेकिन अगर यक़ीन से मालूम हो जाए कि उसमें हराम व नजिस चीज़ नहीं डाली गई है तो बे धोए भी इस्तेमाल कर सकते हैं, लेकिन ऐहतियात इसी में है कि बरतन अपने तौर पर पाक साफ़ कर के ही इस्तेमाल में लाएं।

प्रश्न: जवानी में सर के बाल सफ़ेद हो जाएं तो काला ख़िज़ाब लगाना कैसा है?

उत्तर: काला ख़िज़ाब लगाना मकरूहे तहरीमी है। इमाम नववी रह0 ने लिखा है कि सफेद बालों को सुर्ख और ज़र्द रंग से रंगना मुस्तहब है और काले रंग से रंगना मना है।

प्रश्न: एक शख़्स ने ख़्वाब देखा कि उसने अपनी बीवी को तलाक़ दे दी, जागने पर अपनी बीवी को यह ख़्वाब सुनाया तो क्या इस सूरत में तलाक़ हो जाएगी?

उत्तर: ख़्वाब में बीवी को तलाक़ देना देखने से तलाक़ न होगी ऐसा ख़्वाब बीवी को सुनाने से भी तलाक़ न होगी।

प्रश्न: टीवी से ख़बरें सुनना और टीवी पर दीनी प्रोग्राम देखना कैसा है?

उत्तर: टीवी से ख़बरें सुनना और सही दीनी प्रोग्राम देखना जाएज़ है लेकिन टीवी अ़जीब फ़ित्ना है, ख़बर सुनाने के लिए आम तौर से कोई ख़ूबसूरत औरत रखी जाती है जो मेकअप करके ख़बरें सुनाने आती है यह बात शरअन ना पसन्दीदा है, इसी तरह दीनी प्रोगामों के ख़त्म होते ही आमतौर से कोई मकरूह प्रोग्राम शुरु हो जाता है इसलिए टीवी की लअ़नत से दूर ही रहना अच्छा है, या फिर टीवी पर दीनदारों का कब्ज़ा हो और वह नाजाइज़ प्रोग्राम दिखाने ही न दें या कम अज़ कम इतना हो कि नाजाइज़ प्रोग्रामों को न देखने पर पूरा कन्ट्रोल हो।

शेष पृष्ठ ...30..पर

आदर्श महिला
हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा

—इदारा

हज़रत ख़दीजा रज़ि0 मक्का मुकर्रमा के एक सम्मानित परिवार की महिला थीं, उनका वंश पाँचवीं पीढ़ी में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के वंश से मिलता है और इस रिशते के लिहाज़ से वह आप सल्ल0 की चचेरी बहन थीं, उनकी दो शादियाँ पहले हो चुकी थीं, अब वह बेवा थीं, अति सज्जन और शिष्ट थी, अच्छे नैतिक और अच्छे चरित्र की महिला थीं, इस्लाम से पहले जाहिलियत काल में लोग उनको ''ताहिरा'' के नाम से पुकारते थे, जिसका अर्थ पवित्र है, मक्के की धनवान और दौलतमन्द महिला थीं, उनका जीविका का साधन व्यापार था, मक्के में सबसे बड़ा व्यापार उन्हीं का था।

रसूलुल्लाह सल्ल0 की आयु पच्चीस वर्ष की हो चुकी थी, बहुत से राष्ट्रीय कामों में आप भाग ले चुके थे, व्यापार द्वारा लोगों को आप सल्ल0 के अच्छे व्यवहार का अनुभव हो चुका था, सच्चाई और ईमानदारी में आप प्रसिद्ध थे, लोग आपको अमीन कहते थे, हज़रत ख़दीजा रज़ि0 इन कारणों की वजह से आप सल्ल0 के पास सन्देश भेजा कि आप मेरा माल ले कर सीरिया, बुसरा जाएं जो मुआवज़ा मैं औरों को देती हूँ आप सल्ल0 को उससे बढ़ा कर दूँगी, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने स्वीकार कर लिया और माल लेकर बुसरा (सीरिया) तशरीफ ले गये। वापस आने के लगभग तीन महीने के बाद हज़रत ख़दीजा रज़ि0 ने आप सल्ल0 के पास शादी का पैग़ाम भेजा, उनके वालिद का इन्तिक़ाल हो चुका था, लेकिन चचा मौजूद थे, अरब में औरतों को यह आज़ादी प्राप्त थी कि शादी ब्याह संबंधिति बातें कर सकती थीं, निर्धारित तारीख़ पर अबू तालिब और ख़ानदान के सब बड़े लोग जिनमें हज़रत हमज़ा रज़ि0 भी थे, हज़रत ख़दीजा के मकान पर आए, अबू तालिब ने निकाह का ख़ुतबा पढ़ा और पाँच सौ दिरहम महर तै हुआ, शादी के समय हज़रत ख़दीजा रज़ि0 की आयु चालीस वर्ष थी।

नबी करीम सल्ल0 की सब औलादें लड़के और लड़कियाँ हज़रत इब्राहीम के अलावा, हज़रत ख़दीजा रज़ि0 से हुईं।

दुनियावी एतिबार से हज़रत ख़दीजा रज़ि0 एक उच्च स्थान पर थी, ऊँचे परिवार की थीं, मक्के की धनवान महिला थीं, परन्तु इन सब विशेषताओं और गुणों से बढ़ कर लोक और प्रलोक में जो उन्हें प्रतिष्ठा प्राप्त हुई वह यह कि मानव जाति के सर्व श्रेष्ट इन्सान, सरवरे काइनात हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की पत्नी के रूप में जो स्थान मिला वह सबसे महान था, नबूवत के कामों में उनका मौलिक सहयोग है, कठिनाइयों की घड़ियों में उन्होंने अल्लाह के नबी का पूरा साथ दिया। जब अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्ल0 को नबूवत से सरफ़राज़ फ़रमाया और आप सल्ल0 पर पहली ''वही'' नाज़िल हुई तो आप सल्ल0 पर घबराहट और ख़ौफ़ की कैफ़ियत तारी हुई, घर पहुँच कर आप सल्ल0 ने हज़रत ख़दीजा रज़ि0 से फरमाया मुझे चादर उढ़ा दो, और यह भी फ़रमाया, मुझे अपनी जान का

ख़तरा है, उस मौक़े पर हज़रत ख़दीजा रज़ि0 ने आप सल्ल0 को बहुत ढारस बंधाई, फ़रमाया अल्लाह आपको हलाक़ नहीं करेगा, आप सल्ल0 ने हमेशा कमज़ोरों और बेसहारा लोगों की मदद की, रिश्तेदारों का ख़्याल किया, हज़रत ख़दीजा रज़ि0 ने केवल तसल्ली के इन शब्दों पर बस नहीं किया बल्कि अपने चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफ़ल के पास गईं जो नसरानी थे और आसमानी किताबों के विद्वान और ज्ञानी थे। उन्होंने बताया कि यह अल्लाह के अन्तिम नबी हैं जिनके आने की ख़ुशख़बरी तौरात, इन्जील, ज़बूर में दी गई, काश मैं उस समय तक ज़िन्दा रहता जब उनकी क़ौम उनको उनके वतन से निकालेगी, मैं उनकी मदद करता, इस वार्तालाप और मुलाक़ात के बाद, वरक़ा बिन नौफ़ल का थोड़े दिनों के बाद इन्तिक़ाल हो गया। हज़रत ख़दीजा रज़ि0 मालदार और दौलतमन्द थीं, ज़िन्दगी आराम से गुज़र रही थी, लेकिन अब आप हर तरह की मुसीबतें और तकलीफ़ें, सब्र और शुक्र के साथ बरदाश्त करने के लिए तैयार थीं, प्यारे नबी सल्ल0 की तकलीफ़ों और मुसीबतों में आप बराबर शरीक़ थी, नबी करीम सल्ल0 और आपके ख़ानदान बनी हाशिम का सम्पूर्ण रूप से तीन साल तक बाईकाट किया गया, मुसीबत और फ़ाक़े की इन कठिन घड़ियों में हज़रत ख़दीजा रज़ि0 ने पूरा साथ दिया।

नबूवत का दसवाँ साल था, कि हज़रत ख़दीजा रज़ि0 का इन्तिक़ाल हुआ, उस समय उनकी आयु 65 वर्ष की थी, हमारे नबी सल्ल0 के साथ निकाह हुए 25 वर्ष हुऐ थे। यह साल हमारे नबी सल्ल0 के लिए बड़ी मुसीबत और परेशानी का था उसी साल हुज़ूर सल्ल0 के चचा अबू तालिब का इन्तिक़ाल हुआ था, इस्लामी तारीख़ में वह साल ग़म का साल कहलाता है।

❖❖❖

पृष्ठ ....28....का शेष

प्रश्नः जिस घर में मैय्यत हो जाए उस घर में खाना भेजना कैसा है?

उत्तरः जिस घर में मैय्यत हो गई उस घर के लोगों को खाने पकाने में ज़रूर तकल्लुफ़ होगा ऐसी सूरत में पड़ोस के लोग अगर तद्फ़ीन के बाद पका खाना भेज दें तो सवाब के मुस्तहिक़ होंगे नीज़ यह बात हमदर्दी तअ़ल्लुक व मुहब्बत में इजाफ़े का सबब बनेगी।

प्रश्नः क्या जिस घर में मैय्यत हो जाए उस घर में तीन रोज़ तक चूल्हे पर खाना नहीं पकाना चाहिए?

उत्तरः अस्ल में किसी के इन्तिक़ाल पर तीन रोज़ तक तअ़ज़ियत जाइज़ है, बाज लोग ग़म वाले घर में तीन रोज़ तक खाना भी पहुंचाते रहते हैं ऐसी सूरत में उस घर में खाना पकाने की ज़रूरत ही नहीं वरना ज़रूरत पर उसी रोज़ खाना, पकाना जाइज़ है और अलग ईंट रख कर नहीं उसी चूल्हे पर जाइज़ है मैय्यत वाले घर तीन रोज़ तक चूल्हे पर खाना न पके यह बुरी रस्म है इस बुरी रस्म को तोड़ना ज़रूरी है।

प्रश्नः कुछ लोग कहते हैं कि बे समझे तिलावत का क्या फ़ाइदा है?

उत्तरः जो लोग यह कहते हैं कि बे समझे कुर्आन पढ़ने से क्या फ़ाइदा? वह सख़्त बात ज़बान से निकालते हैं। जिससे उनके ईमान चले जाने का ख़तरा है। (अल्फ़ाज़े कुर्आन पृष्ठ–56) तिलवात ज़रूर करें समझें या न समझें।

❖❖❖

मेज़बानी

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक के यहाँ हज के ज़माने में बड़ी गहमागहमी रहती और बड़ी तादाद में लोग आ आकर पूछते कि हज के लिए कब निकलना है।

दरअसल जब हज का ज़माना आता तो उनके इलाक़े के लोग उनकी लीडरशिप में हज को जाते। सभी लोग उनके पास सफर का खर्च नक़द या अनाज के रूप में जमा कर देते। हज़रत अब्दुल्लाह उनके एक–एक पैसे का हिसाब रखते। सभी का बड़ा ख्याल रखते। अपनी ओर से भरपूर कोशिश करते कि किसी को ज़रा भी तकलीफ न पहुँचे। ये सन् दो हिजरी की बात है। उस समय खुरासान से मक्का पहुँचना बड़े जिगरे का काम था।

ये काफिला हज को पूरा करके खुशी खुशी लौटता। खुशी की बात भी क्यों न हो, एक तो इस्लाम का महत्वपूर्ण कर्तव्य निभाने का सौभाग्य मिला तो दूसरी ओर अब्दुल्लाह जैसे अमीरे कारवाँ का साथ मिला जिसने सफर को आसान बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

हज़रत अब्दुल्लाह की एक आदत थी कि जब हज पूरा कर लेते और वापसी का इरादा करते तो मक्का और मदीना के बाज़ारों से बहुत सी चीज़ें खरीद कर अपने पास रख लेते। घर पहुँचते तो वह घर वालों, रिश्तेदारों, दोस्तों, मुहल्ले वालों और मोहताजों में बाँट देते और उनमें से कोई भी चीज़ अपने पास नहीं रखते।

अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 स्वयं उपहार देते और अपने सहचरों को भी इसके लिए उभारते। इतिहास की किताबों से सहचरों का एक दूसरे को उपहार देने का किस्सा बड़ी अधिकता से लिखा गया है। उपहार देने से आपसी सम्बन्ध में मज़बूती आती है और रिश्ते मधुर होते हैं, इसका हम लोग अपने निजी जीवन में भी अनुभव कर सकते हैं।

बहर हाल जब अब्दुल्लाह बिन मुबारक हज करके घर लौटे तो हिसाब किताब का चिट्ठा निकाला, रास्ते में किस जगह किस दिन और कितना खर्च हुआ इसका पूरा व्यौरा उन लोगों के सामने रखा जो उनके साथ हज करने गये थे। फिर उन लोगों की जमा की गई रक़म पूरी की पूरी उन्हें लौटा देते हैं। लोगों को बड़ी हैरत हुई कि ये क्या माजरा है? लोगों ने पूछा कि हज़रत ये क्या है? हमें तो अपनी आवश्यतानुसार सभी चीज़े समय पर मिलती रहीं, फिर ये पैसा वापसी का क्या मामला है। हज़रत अब्दुल्लाह कहते हैं कि नहीं–नहीं! तुम सब मेरे मेहमान थे, इसलिए सारा खर्च मैंने खुद उठाया और मुझे तो तुम लोगों की सेवा करके बड़ी खुशी महसूस होती थी।

एक दिन एक व्यक्ति ने पूछ ही लिया कि हज़रत! जब आपको कुछ लेना ही न था तो इन्कार कर देते और किसी से कुछ जमा ही न करवाते। कहने लगे कि भाई! अगर मैं ऐसा करने लगूं तो पूरे सफर में काफिले वालों की आखें एहसान तले झुकी रहेंगी, संभव है कि बहुतेरे लोग हमारे साथ मेहमान बन कर चलने से मना कर दें और इस प्रकार वह हज से वंचित हो जाएं।

इस्लाम धर्म में पुण्य के कामों में खर्च करने हेतु खूब उभारा गया है पवित्र कुर्आन में है ''और अपनी क्षमतानुसार खर्च करो जितनी गुंजाइश है''।

(सूरः बकरः 233)

आज बहुत से लोग ग़लत जगह खूब खर्च कर रहे हैं और उसे अपनी शान समझ रहे हैं। शान तो ये है कि अल्लाह के बन्दों की सेवा करके अल्लाह को खुश किया जाए।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

इस्लाम की नजर में प्रतिनिधित्व का सिद्धांत!

इस तफ़्सील के सामने आ जाने के बाद, प्रतिनिधित्व का सिद्धांत जिसे अपनाने के लिए आज–कल बहुत ज़ोर दिया जा रहा है। मान लेने, और इसी की रौशनी में तर्का (मुर्दे का छोड़ा हुआ माल) के बंटवारे का क़ानून बना देने से (मिसाल के तौर पर, सगी यानी प्रत्यक्षरूप से औलाद की मौजूदगी में मरहूम बेटों की औलाद को बाप के हिस्से के बराबर, तर्का मिलने का क़ानून बन जाए) इस्लाम की विरासत व्यवस्था की उक्त ''बुनियाद'' और ''अपरिवर्तनीय नियम'' बिलकुल ढह जाएगी और ये बात किसी भी इस्लाम प्रेमी के लिए काबिले बर्दाश्त और गवारा नहीं हो सकती यही वजह है कि आलिमों के दरम्यान आज तक कोई मतभेद नहीं हुआ, देखिये! मशहूर हनफी अनुसंधानकर्ता आलिम, अबूबक्र अल–जस्सास यही लिखते हैं–

अनुवादः– ''(आजतक) आलिमों का मतभेद इस बारे में नहीं हुआ कि अल्लाह तआ़ला के कौल में शब्द ''औलाद'' से मुराद वो औलाद है जो प्रत्यक्षरूप से हो, और (न इसमें इख़्तिलाफ़ हुआ कि) असली बेटे की मौजूदगी में पोता इससे मुराद नहीं है, और जब असली औलाद न हो तब लड़के की औलाद (यानी पोते पोती) छोड़ा हुआ माल पाने की हक़दार हो गई लड़की की औलाद नहीं। (अहकामुल कुरआन, 80/2)

इल्मुल फराइज (विरासत बंटवारे का ज्ञान) के माहिर, मशहूर सहाबी हजरत जैद बिन साबित (रजि०) से भी बुखारी में यही बात साफ–साफ लिखी गई है, फरमाते हैं–

अनुवादः– ''पोती, पोते, लड़कों की अनुपस्थिति में बिलकुल बेटी, बेटे की जगह पर होते हैं और बेटे की मौजूदगी में पोता वारिस नहीं होता। (बुखारी, पृष्ठ– 997, जिल्द– 2 और बुखारी के मशहूर शरह लिखने वाले अल्लामा ऐनी रह० ने अपनी शरह में लिखा है कि सारे सहाबा किराम की इस पर सहमति है, पृष्ठ–97, जिल्द 11)

इसके अलावा अक़्ली तौर पर भी प्रतिनिधित्व वाले सिद्धांत के सही होने को साबित किया जा सकना बहुत मुश्किल काम है, और फिर ये हक़ीक़त भी ध्यान देने लायक है कि विभिन्न इंसानों की अक़्लें आमतौर पर अलग अलग फैसले करती हैं, इस हालत में किसकी अक़्ल को मानक बनाया जाए?ऐसी हालत में इंसानी अक़्ल से बलन्द बारगाह के (यानी वह्य के जरिये मालूम) फैसले ही मानक बनाए जाएं, यही सही अक़्ल का तकाज़ा होगा, बहरहाल ये बात सभी बुद्धिमानों के यहाँ मान्य है कि विरासत की बुनियाद ज़रूरत व ग़रीबी पर, या इस जैसी किसी दूसरी वक़्ती और अस्थाई चीज़ पर नहीं है, वरना हर जरूरतमंद, या कम से कम जरूरतमंद रिश्तेदार, और पड़ोसी को ज़्यादा हक़दार समझा जाता। सबसे ज़्यादा खुशहाल रिश्तेदारों के मुकाबले में भी, मगर सब जानते हैं कि ऐसा कोई भी सही नहीं समझता, इससे मालूम हुआ कि विरासत में, रिश्तेदारी की नज़दीकी ही बुनियादी हैसियत रखता है, (तफ़्सील के लिए देखिये इमाम गज़्जाली की किताब "अल–वजीज'' पृष्ठ– 260, जिल्द–1) वो

चाहे नसबी हो या निकाह की वजह से हो) और ये बात भी आम बुद्धि से सम्बन्ध रखने वाली है विभिन्न श्रेणी के करीबी व दूर के रिश्तेदारों की मौजूदगी में तरजीह ज़्यादा करीब वाले रिश्तेदार को देनी चाहिए, वरना फिर तो सगे बेटे की मौजूदगी में भी भाई के लड़के या किसी और दूर के रिश्तेदार को बराबर विरासत देना ज़रूरी, या कम से कम इसकी गुंजाइश होनी चाहिए जाहिर है कि इसे कोई ज़रूरी नहीं कहता, तो फिर समझ नहीं आता कि सगी बिला वास्ता औलाद की मौजूदगी में उससे दूर का यानी एक वास्ता बीच में आने के बाद, वजूद में आने वाली औलाद को विरासत में बराबर का हिस्सा दिलवाए जाने पर जोर दिया जाना अक़्लमंदी की कौन सी किस्म है? रहा ये कहना कि ऐसी सूरतों में आम तौर पर ये विरासत से महरूम पोता, जरूरतमंद और आर्थिक सहायता का सब से ज़्यादा हकदार बल्कि मोहताज है, लिहाजा ''इंसानियत'' और ''नैतिकता'' का तकाज़ा ये होना चाहिए कि उसे भी विरासत में शरीक़ किया जाए, लिहाजा इसका जवाब ऊपर की लाइनों में गुज़र चुका है कि जरूरत व ग़रीबी पर विरासत की बुनियाद नहीं है, वरना फिर तो पोते ही को क्यों, बल्कि सारे ज़रूरतमंदों, खास तौर पर ऐसे सारे करीब व दूर के रिश्तेदारों और पड़ोसियों को भी दिलवाना चाहिए जो ज़रूरतमंद और मोहताज होने में उसके बराबर या उससे ज़्यादा हों, इसके नतीजे में विरासत का माल फैल कर एक हिस्से में इतनी कम राशि क्यों न आये कि एक दिन की ज़रूरत के लिए भी वो किसी के लिए काफी न हो।

विरासत से महरूम पोते के खर्चे की ज़िम्मेदारी किस पर?:–

विरासत से महरूम हो जाने वाले रिश्तेदारों खासतौर पर यतीम पोते को विरासत में हिस्सेदार करार न देने से ये न समझ लिया जाए कि शरीयत ने उस बच्चे की कोई रिआयत नहीं की और उसे यूँही बे यारो मददगार ऐड़ियाँ रगड़– रगड़ कर मर जाने के लिए छोड़ दिया है नहीं! बल्कि उसकी ज़िम्मेदारी और उसे ज़िन्दगी की ज़रूरतें उपलब्ध कराने के लिए चाहे उसके दादा के पास माल व जायदाद हो या न हो, हर हालत के लिए शरई कानून के अंदर बहुत तफ़्सील के साथ हुक्म और सिफारिशें मौजूद हैं और विरासत की मायावीय राशि पर निर्भर होने के बजाए अलग अलग हालात में मौक़े के मुताबिक (अगर बच्चा मालदार नहीं है तो) अलग अलग लोगों पर उसके खर्चे की जिम्मेदारी, सिर्फ नैतिक नहीं बल्कि संवैधानिक रूप से डाली गई है, मिसाल के तौर पर अक्सर हालतों में ऐसे निर्धन बच्चे की जिम्मेदारी सब से पहले दादा के जिम्मे (निर्धारित नियम के अनुसार) होती है। (विवरण के लिए देखिये, फत्हुल कदीर, 38/2, जादुल मआदः 144/4, अल–मीजान लिश्शियिररानी 157/2, और दूसरी फिक़्ह की किताबें जैसे शामी, पृ० 271, जिल्द–2 का नफाकात का अध्याय) और खर्चे की ये जिम्मेदारी बच्चों के बालिग होने तक रहती है।

हनफी मसलक में तो धर्म अलग होने के बावजूद यतीम पोते का खर्चा दादा के जिम्मे है (हिदाया–2 पृ० 426) बच्चे की मालदार माँ मौजूद हो और दादा भी तो उसका खर्चा दोनों पर होगा, मगर दादा पर दो हिस्से माँ पर एक हिस्सा, जैसे कि मशहूर किताब ''बदाए'' में है। (बदाए उस्सनाए पृ० 23/4)

.....ज़ारी.....

❖❖❖

सीरते पाक को ग़ैरों के सामने लाने की ज़रूरत

मौ0 सय्यद मोहम्मद ह़मज़ा हसनी नदवी रह0

अनु0: आफ़ताब आलम नदवी ख़ैराबादी

रबीउल अव्वल का मुबारक महीना शुरु होने वाला है, इस महीने में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत से पूरी कायनात मुनव्वर हुई, तारीकियाँ दूर हुईं, ज़ालिमाना निज़ाम पारा–पारा हुआ, और रहमतुल्लिलआलमीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आमद से हर तरफ़ बादे बहारी चलने लगी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो पैग़ाम लेकर आये वो हर उस शख्स के लिए बाइसे नजात और फलाह है, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत उसके दिलो दिमाग़ में रच बस गई, और उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत को अपने लिए बाइसे बरकत और कामयाबी समझा, और उसी राह पर चलते हुए ज़िन्दगी गुज़ार दी।

हमारे लिये यह ज़रूरी है, कि हम सीरतुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुताला करते रहें, और उसको अपने दिलो दिमाग़ की गिज़ा बना लें, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक एक सुन्नत पर खुद भी अमल करें और अपने अहलो अयाल को तलक़ीन करें कि वो भी अपनी ज़िन्दगी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर अमल करते हुए गुज़ारें तभी दुनिया व आखिरत की कामयाबी हमको हासिल होगी, और अल्लाह तआला के इन्आमात की बारिश होगी।

आज जिस क़िस्म के हालात हम पर आ रहे हैं, और मुसलमानों के ख़िलफ, कुफ़्र की ताक़तें एक हो गयी हैं, और ज़िन्दगी के हर मैदान में मुसलमानों के खिलाफ़ साजिशें की जा रही हैं, इससे नजात और बचाव सिर्फ़ इस बात में है कि हम इस्लाम के सच्चे पक्के वफ़ादार बनें, और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े को हर वक़्त अपने सामने रखें, नफ़्स और शैतान से बचते हुए, कुर्आने मजीद और हदीसे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीमात को हर वक़्त सामने रखें, और उन पर हर हाल में अमल करें।

ना सिर्फ़ खुद अमल करें बल्कि अपने दीगर मुसलमान भाइयों को भी इस तरफ़ मुतवज्जह करें। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी के गोशे सामने लायें, ना सिर्फ मुसलमानों के सामने बल्कि उन ग़ैर मुस्लिमों के सामने भी लायें, जिनसे हमारे सामाजिक तअल्लुक़ात हैं, चाहे तिजारती तअल्लुक़ात हों, या पड़ोस के तअल्लुक़ात हों, इससे वह तमाम गलत फहमियाँ दूर होंगी जिनकी वजह से मुसलमानों के ख़िलाफ़ भेदभाव का बरताव होता है और इस्लाम का रोशन चेहरा धूल में छुपा दिया जाता है। हमको ये बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिए, कि हमारा तर्ज़े अमल और आम मुआमलात में हमारा किरदार ही अस्ल हैसियत रखता है।

❖❖❖

इस्लाम की आस्थाएं
ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण

शेख़ अली तंतावी

ईमान की उपलब्धि यही दिल का अमल (कैफ़ियत व हालत) है जिसका सारांश हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने अपने एक मशहूर कथन में, जिसे ''जवामिउल कलिम'' कहा जा सकता है, ऐसे व्यापक और साफ़ अंदाज़ में बयान फ़रमा दिया है कि किसी इन्सान की वर्णनशैली सुभाषिता एवं साहित्यिकता और सटीकता में उसका मुक़ाबला नहीं कर सकती और जो आप सल्ल0 के नबी होने की निशानियों में से है। ''एहसान'' (उत्तमता) की परिभाषा बयान करते हुए आप सल्ल0 ने फ़रमाया–

''अल्लाह की इबादत इस प्रकार किया करो कि गोया तुम उसे देख रहे हो, क्योंकि अगर तुम उसे न देख सकोगे तो वह तो तुम्हें ज़रूर देख रहा है।''

(हदीस)

अल्लाह को याद रखनाः–

ईमान की उपलब्धियों में से पहली उपलब्धि हर समय अल्लाह को याद रखना है। मैंने किसी बुज़ुर्ग के बारे में (जिनका नाम मुझे याद नहीं) कहीं पढ़ा था कि उनके व्यवहार सुलूक (ख़ुदा की याद में मग्न रहने) का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ। उनके एक नेक और इबादतगुज़ार मामा थे। उन्होंने एक दिन अपने मामा से कहा कि मुझे ऐसा अमल बताइए कि जिसके नतीजे में मैं आप जैसा हो जाऊँ। उन्होंने कहा कि हर रोज़ तीन बार कहा करो, ''अल्लाह मुझे देख रहा है और वह मेरी हर बात की ख़बर रखता है।'' वे एक सप्ताह तक यह दुहराते रहे इसके बाद उनके मामा ने हुक्म दिया कि रोज़ाना हर नमाज़ के बाद तीन बार यही दुहराओ। उन्होंने यह अमल भी शुरु कर दिया, एक सप्ताह और गुज़र गया फिर उन्होंने हुक्म दिया कि अब यही बात ज़बान हिलाए बग़ैर दिल में दुहराते रहो, इस प्रकार तुम हमेशा ज़िक्र करने वाले और हर वक़्त अल्लाह की तरफ़ ध्यान रखने वाले हो जाओगे।

कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने जितना ज़िक्र का हुक्म दिया है, उतना किसी और चीज़ का नहीं दिया और जितनी प्रशंसा ज़िक्र करने वालों की की है, किसी और की नहीं की। अरबी शब्दकोश के अनुसार ज़िक्र दो क़िस्म का है। एक दिल में याद रखना और दूसरा ज़बान से ज़िक्र करना। और ये दोनों क़िस्में कुर्आन मजीद में वर्णित हैं।

अगर आप चाहते हैं कि आपमें ज़िक्र करने वाले का गुण पैदा हो जाए तो अपने दिल में, यानी अपनी चेतना में अल्लाह को याद कीजिए। चाहे आप अकेले हों या किसी महफ़िल में, बाज़ार में हों या रास्ते में, आप हर समय और हर हाल में यह बात याद रखें कि अल्लाह आपको देख रहा है।

अतः आपसे कोई ऐसी हरक़त न होने पाए जो आपके पालनहार को नापसन्द हो। कोई फ़र्ज़ अदा करें तो आपके मन–मस्तिष्क में यह बात रहनी चाहिए कि अल्लाह के हुक्म का पालन कर रहे हैं। इसी प्रकार अगर हराम कामों से बचें तो यह सोच कर बचें कि उनसे अल्लाह तआला ने मना किया है। वैध (हलाल) काम करते वक़्त भी आपकी नीयत ऐसी होनी चाहिए कि आप सवाब (प्रतिफल) के पात्र हों। और अगर किसी समय आपके सामने दो रास्ते आ जाएं तो उनमें से वह राह चुनिए जो आपको जन्नत (स्वर्ग) से क़रीब करे और जहन्नम से दूर ले जाए। और अगर कभी भूल कर गुनाह कर बैठें और फिर आपको एहसास हो कि आपने

ग़लत काम किया है तो तुरंत तौबा कीजिए और अल्लाह तआला से माफ़ी मांगिए।

''हक़ीक़त में जो लोग परहेज़गार हैं, उनका हाल यह होता है कि कभी शैतान के असर से कोई बुरा ख़याल उन्हें छू भी जाता है तो वे फ़ौरन चौकन्ने हो जाते हैं और फिर उन्हें साफ़ नज़र आने लगता है कि उनके लिए काम करने का सही तरीक़ा क्या है।''

(कुरआन–7:201)

इसके अलावा ज़बान से भी अल्लाह को याद कीजिए, इसलिए कि बेहतरीन ज़िक्र ज़बान का ज़िक्र है। शर्त यह है कि यह ज़िक्र दिल की गहराई से किया गया हो। अगर दिमाग़ कहीं और हो और जो कुछ आप ज़बान से अदा कर रहे हों, दिल में न उतरे तो यह बोल निरर्थक होगा, निरुद्देश्य और बेमाना। जिस प्रकार शाम (सीरिया) में केक बेचने वाले आवाज़ लगाते हैं ''अल्लाह करीम'' तो उनका मक़सद अल्लाह का ज़िक्र नहीं, बल्कि केक बेचना होता है। या सब्ज़ी बेचने वाले पुकारते हैं ''अल्लाह दाइम (अल्लाह सदैव रहने वाला है)'' वगैरह। और कभी–कभी ज़बान का ज़िक्र गुनाह भी बन जाता है। मिसाल के तौर पर कोई आदमी शराब पीते समय ''बिस्मिल्लाह'' (शुरु अल्लाह के नाम) पढ़े या पेशेवर गानेवालियों के अश्लील गीतों पर ''सुब्हानल्लाह'' कहा जाए।

सबसे बेहतर ज़िक्र कुरआन मजीद की तिलावत है। सिवाय उन मौक़ों के जिनके लिए नबी सल्ल0 ने ख़ास ज़िक्रों की हिदायत फ़रमाई है। मिसाल के तौर पर रुकूअ़ और सजदे की दुआएं (ज़िक्र) या वे दुआएं जो हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से उद्धृत हैं।

भय और आशा की दशाः–

मोमिन जहां हर वक़्त अल्लाह के अज़ाब से डरता रहता है, वहीं वह इस आशा से बहुत प्रसन्न रहता है कि अल्लाह अपने रहमो–करम से क्षमा कर देगा। जब उसे ख़याल आता है कि अल्लाह तआला बहुत जल्द हिसाब लेने वाला और सख़्त सज़ा देने वाला है तो उस पर भय की लहर दौड़ जाती है, फिर उसे याद आता है कि वह कृपालु और क्षमावान है और सबसे बड़ा रहम करने वाला है तो उसे आशा की किरण नज़र आने लगती है। ईमान में ये दो अलग– अलग दशाएं इस कारण हैं कि इन्सान पर अगर हर वक़्त भय का ही राज रहे और उसका दिल इतना प्रभावित हो जाए कि अल्लाह की कृपा और रहमत से ही मायूस हो जाए तो यह आयत उस पर सही साबित होगी कि ''अल्लाह की रहमत से तो विधर्मी (काफ़िर) लोग ही मायूस हुआ करते हैं''।

(कुर्आन–12:87)

और अगर उसके दिल में हर वक़्त सिर्फ़ आशां (उम्मीद) ही उमड़ती रहे और अल्लाह की पकड़ से बेख़बर हो जाए तो उस पर यह आयत सही साबित होती है कि, ''अल्लाह की चाल से वही क़ौम निडर होती है जो तबाह होने वाली हो।''

(कुर्आन–7:99)

हम पहले बता चुके हैं कि सर्व जगत का सृष्टा अल्लाह सृष्टि के समान नहीं है। इसलिए उससे डरने का अंदाज़ भी वह नहीं है, जैसे सृष्टि की किसी चीज़ से डरा जाता है। मिसाल के तौर पर आप अकेले और निहत्थे हों और कोई शेर दहाड़ता हुआ आप पर हमलावर हो जाए तो आप हक़ीक़त में डर जाएंगे, लेकिन अल्लाह का भय शेर से डरने के समान नहीं है। शेर का ख़तरा आपकी जान पर से टल भी सकता है, लेकिन अगर अल्लाह, जो शेर को पैदा करने वाला और पालहनहार है, आपको शेर के हवाले करना चाहे तो उसके इस फ़ैसले को, जो उसने आपके ख़िलाफ़ जारी कर दिया है, कोई भी टाल नहीं सकता।

इसी प्रकार गरजती–चिंघाड़ती बाढ़ बढ़ती चली आ

रही है और उसके रास्ते में खड़े हों और उससे बचने की बज़ाहिर कोई सूरत नज़र न आती हो, ऐसी दशा में भी आप ज़रूर भय महसूस करेंगे, यह भय व डर भी अल्लाह के भय के समान नहीं है। अल्लाह तआला में तो यह शक्ति है कि अगर वह चाहे तो बाढ़ को रोक सकता है, सुखा सकता है और लौटा भी सकता है। फिर सैलाब से तो भागना भी संभव है और बचने की संभावना भी। लेकिन जब अज़ाब आएगा तो उससे कहीं भी भागा नहीं जा सकता। इन्सान बीमारी से, बलाओं से, दोस्तों के बिछुड़ने से भयभीत रहता है, लेकिन यह भय भी अल्लाह के भय जैसा नहीं है। ये तमाम बातें भी तो उसी के अधिकार में हैं। वह चाहे तो आपको मुसीबत में गिरफ़्तार कर दे और चाहे तो सुरक्षित रखे। इस क़ायनात में दूसरी कोई ताक़त नहीं जो अल्लाह की तरफ़ से भेजी हुई मुसीबत को टाल सके।

अतः मोमिन पर लाज़िम है कि वह भय और आशा की दशा में रहे जब नमाज़ के लिए खड़ा हो और ज़बान से कृपाशील और दयावान के शब्द उच्चारित करे तो उम्मीद और आशा की कैफ़ियत महसूस करे और जब ''अल्लाह हिसाब के दिन का मालिक है'' कहे तो उस पर भय छाया हुआ हो। आजकल अधिकांश मुसलमानों पर भय के मुक़ाबले में उम्मीद की कैफ़ियत का अधिक ज़ोर है। और माफ़ कर दिये जोने की उम्मीद और आरज़ू, अज़ाब से बचने की कोशिश पर हावी है।

इसके अलावा अगर मुसलमान अपने धार्मिक कर्तव्यों को पूरा करता है (चाहे वह बहुत से जायज़ कामों का छोड़ने वाला हो) और हराम कामों से बचता रहे (चाहे वह मकरूह कामों से बच न सके) तो उसकी गिनती भी अल्लाह से डरने वाले परहेज़गारों में होगी। लेकिन जन्नत (स्वर्ग) में ऊँचे दरजों से वंचित रहेगा। इसकी मिसाल उस विद्यार्थी की सी है जो कम दर्जे की सफलता प्राप्त करता है, और विशेष स्थान और उच्च श्रेणी की सफलता प्राप्त कर पाने से वंचित रहता है। ऐसी दशा में उसे क्लास (स्कूल) से तो नहीं निकाला जाता, अलबत्ता उसकी सफलता मध्यम श्रेणी की होती है।

अल्लाह पर भरोसाः–

अल्लाह का इरशाद है– ''अगर तुम हक़ीक़त में अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उस पर भरोसा करो।''

(कुरआन–10:84)

कुरआन में एक जगह और इरशाद है– ''अल्लाह को वे लोग पसन्द हैं जो उसके भरोसे पर काम करते हैं।''

(कुरआन–3:159)

इन आयतों में जिस भरोसे का ज़िक्र है वह अस्ल में क्या है? उसकी हक़ीक़त क्या है?

हम पहले यह बात बयान कर चुके हैं कि इस दुनिया में जो भी चीज़ें अल्लाह ने पैदा की हैं वे नफ़ा भी देती हैं और नुक़सान भी पहुँचाती हैं। इसी प्रकार प्रकृति के नियम नफ़ा के कारक भी हैं और नुक़सान के भी। तो क्या भरोसा के माने यह हैं कि हम इस क़ायनात (सृष्टि) की चीज़ों और प्राकृतिक नियमों के नफ़ा और नुक़सान से मुँह मोड़ लें और सूझबूझ तथा उपायों से काम लेना छोड़ दें?

सूफ़ियों के गिरोह में हमें कुछ ऐसे लोग भी मिलते हैं जो संसाधनों और उपायों को छोड़ने को ही अल्लाह पर भरोसा करना समझते हैं। ये लोग रोज़ी कमाने के लिए भी काम नहीं करते, बल्कि प्रतीक्षा करते रहते हैं कि उनका हिस्सा बिना हाथ हिलाये उन तक पहुँच जाए। वे मरीज़ का इलाज नहीं करते– कराते और यह उम्मीद रखते हैं कि दवा के बग़ैर ही मर्ज़ अच्छा हो जाएगा। रेगिस्तानों में सफ़र करते वक़्त ज़ादे–राह (यात्रा सामग्री) साथ नहीं रखते और समझते हैं कि रोज़ी (आजीविका) बिना मशक़्क़त और मेहनत के

उन्हें मिलती रहेगी। वे तालीम (शिक्षा) हासिल करने के विरोधी हैं, उनका मानना है कि इल्म (ज्ञान) ख़ुद से प्राप्त हो जाएगा। ये सब बातें इस्लामी शरीअत के ख़िलाफ़ हैं। शरीअत का तो हुक्म यह है–

''तुम ज़मीन में चलो–फिरो और खुदा की रोज़ी तलाश करो''। (कुर्आन–62:10)

और यह भी आदेश है– ''सफ़र में ज़ादे–राह (यात्रा सामग्री) लेकर चलो।''

(कुर्आन–2:197)

और मशहूर हदीस है– ''इल्म (ज्ञान) प्रापत करना हर मुसलमान मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है।''

पैग़म्बर सल्ल0 का फ़रमान है– ''ऐ अल्लाह के बन्दो! ज़रूरत के वक़्त दवा का इस्तेमाल करो।''

ग़ैर–मुस्लिम समाज में, जो भौतिक बुनियादों पर क़ायम हैं और सिर्फ़ भौतिकवादी जीवन ही उसके जीवन का मक़सद है, बहुत से लोग यह अक़ीदा रखते हैं कि भौतिक साधन ही परिणाम प्राप्ति का एक मात्र साधन है। यानी दवा खुद ही स्वास्थ्य प्रदान करती है और कोशिश और प्रयत्न ही किसी मक़सद को हासिल करने का वास्तविक उपाय है। हालांकि यह बात तथ्य के विरुद्ध है। अधिकांशतः देखने में आता है कि तमाम साधन और उपाय मौजूद और एकत्र होते हैं, लेकिन इच्छित परिणाम प्राप्त नहीं होते। कई बार आप दवा इस्तेमाल करते हैं, लेकिन रोग से छुटकारा नहीं मिलता। अधिकांशतः अस्पताल के एक ही कमरे में एक ही मर्ज़ के दो मरीज़ होते हैं, डॉक्टर भी एक ही होता है, दवाएं भी एक ही क़िस्म की दी जाती हैं, लेकिन उनमें से एक मर जाता है और दूसरा तन्दुरुस्त हो जाता है। कभी कभी किसान नये नये औज़ारों से खेती करता है, अच्छे बीज इस्तेमाल करता है, क़ीमती खाद डालता है लेकिन तेज़ गर्मी या सर्दी की लहर आ जाती है या झुलसा देने वाला सूखा या सब कुछ बहा ले जाने वाली बाढ़ आ जाती है और तमाम कोशिशें और उपाय कुछ भी काम नहीं आते हैं।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि न तो सिर्फ़ साधन और उपाय ही यक़ीनी नतीजों की प्राप्ति के माध्यम हैं और न उपायों को छोड़ देना ही बुद्धिसंगत कार्यशैली है। बल्कि अक़्ल का तक़ाज़ा और शरीअत (इस्लामी विधान) का हुक्म भी यह है कि पहले तो तमाम उपाय और साधन अपनाए जाएं। फ़ारसी में कहावत है, ''ऊँटनी को रस्सी से बांधो और अल्लाह पर भरोसा करो।'' अपने सबक़ को पूरी तरह याद करो, फिर अल्लाह पर भरोसा करते हुए परीक्षा में सफलता की दुआ मांगो। यही हक़ीक़ी (वास्तविक) भरोसा है।

संसाधनों को नज़रअंदाज़ करना और प्राकृतिक नियमों से काम न लेना भरोसा नहीं है। और यह भी ''भरोसे'' के विपरीत है कि व्यक्ति यह भूल जाए कि लाभ–हानि का मालिक वास्तव में केवल अल्लाह है। अल्लाह से हट कर दूसरी चीज़ों को यह समझने लगे कि वे उसे लाभ–हानि पहुँचा सकती हैं तो यह अल्लाह पर भरोसा के ख़िलाफ़ है। साधन और उपायों का प्रयोग करना भी ज़रूरी है। संसाधनों से काम लेने का हुक्म शरीअत ने दिया है। प्राकृतिक नियमों का पालन भी इसी प्रकार हो सकता है। लेकिन चूंकि सफल करना अल्लाह के अधिकार में है, इसलिए सिर्फ़ भौतिक संसाधन पर हक़ीक़ी भरोसा करने वाला वह आदमी है जो मक़सद हासिल करने के लिए अपनी पूरी कोशिश को काम में लाए और तमाम उपायों से काम ले और यह यक़ीन रखे कि सफलता प्रदान करने वाला सिर्फ़ अल्लाह है। अल्लाह ही पर भरोसा करे और उसी से अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्ति की दुआ मांगे।

❖❖❖

स्वास्थ्य

शुगर मरीज़ न करें ये 5 गलतियां

डॉ0 लोकेश के0 भारती

शरीर में नमक, चीनी और पानी समेत सभी चीज़ों की मात्राएं तय होती हैं। जब ये कम या ज़्यादा हो जाए तो हम बीमार पड़ सकते हैं। इस पर काबू न पाया जाए तो बीमारी स्थाई हो जाती है। किसी भी बीमारी से पहले कुछ लक्षण दिखने लगते हैं। खासकर लाइफस्टाइल से जुड़ी बीमारियों जैसे डायबीटीज और ब्लड प्रेशर में। यहां हम चर्चा कर रहे हैं डायबीटीज की। यह दो तरह की होती है–

1. टाईप–1:– जब शरीर में इंसुलिन हार्मोन बनना पूरी तरह बंद हो जाता है तब यह बीमारी होती है। भारत में इसके मरीज बहुत कम हैं। अमूमन 4000 में से किसी 1 बच्चे को यह बीमारी होती है।

2. टाईप–2:– इसे लाइफस्टाइल की समस्या भी कह सकते हैं। पूरी दुनिया में यह बीमारी बढ़ रही है। लाइफस्टाइल को दुरुस्त करके इसे काबू में रखा जा सकता है। डायबीटीज होने पर ये 5 गलतियां न करें तो कई तरह परेशानियों को कम किया जा सकता है।

1. मोटापा घटाने के लिए काम न करना:–

वजन सही है, लेकिन डायबीटीज है तो डाइट यानी खानपान पर ध्यान देना और एक्सरसाइज करना ही उपाय है। ऐसी स्थिति 10 से 20 फीसदी लोगों की होती है। ज़्यादतर लोगों में शुगर बढ़ने की वजह मोटापा होता है। मोटापे की वजह से फैटी लिवर की परेशानी होती है। यह मोटापा उस शख्स के लाइफस्टाइल, खानपान, फैमिली हिस्ट्री आदि की वजह से हो सकता है। जब किसी को पहली बार शुगर लेवल बढ़ने का पता चलता है तो यह मान लेना चाहिए कि उसे शरीर में 50 फीसदी इंसुलिन बन रहा है। अगर इसे सुधारा न जाए तो यह हर साल 5 फीसदी के हिसाब से कम होता जाता है। ऐसे में अगर शुगर होने से पहले यानी प्री–डायबिटिक स्टेज या फिर शुगर होने के शुरुआती दिनों में अपना वजन 10 से 15 फीसदी तक कम कर लिया जाए तो शुगर लेवल काफी समय तक काबू में रहेगा। कई बार तो दवा शुरु करने की ज़रूरत भी नहीं होती, अगर होती भी है तो बहुत ही कम डोज लेनी पड़ती है।

वजन को ऐसे करें कम

० हर दिन एक से दो चम्मच तेल में बनी सब्जियाँ, मीठा बिलकुल नहीं, अगर खाना भी हो तो एक छोटा टुकड़ा गुड़ का ले सकते हैं। सुबह का ब्रेकफास्ट 8 से 9 बजे तक, दोपहर का खाना 1 से 2 के बीच, शाम में स्नैक्स 4 से 5 के बीच और रात का खना 7 बजे तक। रात के खाने में कार्बोहाइड्रेट्स (चावल रोटी आदि) और कैलोरी कम से कम लें। जंक फूड (पिज्जा, बर्गर, नूडल्स जैसी चीजों को बहुत कम कर दें या फिर बिलकुल बंद।)

० हर दिन 40–50 मिनट वॉक और करीब 30 मिनट तक कसरत भी ज़रूर करें।

० हर दिन 15–20 मिनट योगासन करें। साथ में 10 से 15 मिनट प्राणायाम भी ज़रूरी है।

० शाम या रात को खाना खाने के बाद 20 मिनट बाद 20–30 मिनट तक ज़रूर टहलें। रफ्तार धीमी रखें।

० हर दिन 7–8 घंटे की नींद लें। यह लाइफस्टाइल को दुरुस्त करने के लिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी है।

2. ज़्यादा तेल में बनी चीज़ें खाते रहनाः–

ज़्यादा शुगर के मरीज यही सोचते हैं कि मीठा कम कर दिया या छोड़ दिया तो अब कम हो गया। यह पूरी तरह गलत है। यह ज़रूर देखना चाहिए कि डाइट में किस तरह की चीज़ें ज़्यादा हैं। अगर तेल मसाले और ऐसे आइटम्स जिनमें ज़्यादा कैलोरी होती है तो उन्हें ज़रूर बंद कर दें या फिर बहुत कम कर देना चाहिए। एक शुगर पेशंट को हर दिन 1600 से कम कैलोरी ही लेनी चाहिए। इससे शुगर लेवल भी काबू में रहेगा और वजन भी। रिफाइंड चीजें (चीनी, मैदा, सफेद नमक) जैसी चीज़ें बहुत हानिकारक हैं।

० अगर ग्लूटेन (गेहूँ और जौ में मौजूद प्रोटीन) पचाने में परेशानी हो तो उसे भी बंद कर दें।

० लैक्टोज इंटॉलरेंस यानी दूध पचाने में परेशानी हो तो उसे भी बंद कर सकते हैं।

3. चावल से परहेज, रोटियाँ ज़्यादा लेनाः–

बहुत से लोग इस तरह की गलतफहमी का शिकार होते हैं। शुगर के मरीज चावल बंद कर देते हैं और रोटियों की संख्या बढ़ा देते हैं। उन्हें लगता है कि सिर्फ चावल यानी भात खाने से ही शुगर लेवल बढ़ता है। सच्चाई इससे अलग है। शुगर बढ़ने की वजह चावल और रोटी दोनों होती हैं। हम जो कुछ भी खाते हैं तो उसकी वजह से शुगर लेवल बढ़ता है। यह कितना बढ़ेगा, यह खाने वाली चीज़ की मात्रा पर उसमें कितना ग्लूकोज है, इस बात पर निर्भर करता है। इसलिए शुगर मरीज को चावल खाने में भी कोई परेशानी नहीं है। ध्यान सिर्फ इतना रखना है कि हर दिन हम जो भी खायें, उससे पैदा हुई कैलोरी को बर्न कर सकें। फिर भी 1–2 कटोरी से ज़्यादा चावल एक दिन में न ही खाएं तो बेहतर है।

4. दवा और जाँच के मामले में लापरवाहीः–

डायबीटीज और ब्लड प्रेशर जैसी बीमारियों में आमतौर पर मरीज को ज़िन्दगी भर इंसुलिन या दवा लेने की ज़रूरत पड़ती है। ऐसे में कई बार मरीज दवाएं लेने के प्रति लापरवाही बरतते हैं। डायबीटीज के मरीज कई बार किसी पार्टी में जाते हैं और यह सोच कर ज़्यादा मीठा खा लेते हैं कि घर जा कर इंसुलिन की डोज बढ़ा लेंगे। यह सोच पूरी तरह से गलत है। इसके अलावा कई बार मरीज घर पर सही वक़्त पर दवा नहीं लेते। कई बार दवा खाना भूल भी जाते हैं। दवा लेने का सही समय खाना खाने से 10 मिनट पहले या फिर खाने के 15 मिनट बाद है। घर पर ग्लूकोमीटर (शुगर जांचने की मशीन) हो तो भी इंसुलिन लेने वाले को हर दूसरे दिन और दवा लेने वाले को हफ़्ते में 1 से 2 बार शुगर की जांच करनी चाहिए।

5. माँसपेशियों को मजबूत न बनानाः–

जब भी डायबीटीज की बात होती है तो पैंक्रिआज़, दिल आदि की चर्चा हमेशा की जाती है। लेकिन हम लिवर को भूल जाते हैं। हालांकि लिवर 300 से ज़्यादा तरह के काम करता है। हम जो भी खाते हैं, उसे ग्लूकोज (शुगर) में बदल कर ही शरीर उपयोग कर पाता है। हम जितनी ज़्यादा शुगर खाते हैं या जो शरीर में पहले से मौजूद है, उसका उपयोग सिर्फ माँसपेशियाँ और लिवर ही करता है। जब हम फिजिकल ऐक्टिविटी नहीं करते तो माँसपेशियों में मौजूद शुगर भी लिवर में चली जाती है। लिवर में यह अतिरिक्त शुगर फैट में बदल जाती है। लिवर में ज़्यादा फैट जमा होने से लिवर उसे सीधे खून में भेज देता है। नतीजतन शरीर में कोलेस्ट्रॉल बढ़ जाता है। इसलिए ज़्यादा शुगर वाली चीज़े न खाएं।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

मुम्बई में लोहे का पूरा पुल ही चोरीः–

मुम्बई में एक नाले पर बना 6,000 किलो वजनी लोहे का पुल चोरी हो गया। इस मामले में चार लोगों को गिरफ़्तार किया गया है। पुलिस ने बताया कि सीसीटीवी फुटेज के जरिए रजिस्ट्रेशन नंबर से ट्रक को ट्रैक किया गया। जांच में पता चला कि जिस कंपनी को ब्रिज बनाने का ठेका दिया गया था, उसी का एक कर्मचारी चोरी में शामिल था।

रोबोट्स का फुटबालः–

फ्रांस में इन दिनों *RoboCup* नाम के इवेंट में रोबोट्स का फुटबाल कम्पीटिशन चल रहा है। यह दुनिया का सबसे बड़ा आर्टिफिशल इंटेलिजेंस कंपीटिशन है। यहां रोबोट फुटबाल खेलते, फर्स्ट एड सीखते नज़र आ जाएंगे। 50 देशों के 2500 प्रतिभागी इस इवेंट में शामिल हैं।

1.30. करोड़ में बिका सबसे पुराना iPhoneः–

पहली जेनरेशन का एक आईफोन नीलामी में 158,000 डॉलर (लगभग 1.3 करोड़ रूपये) में बेचा गया है। इसे 29 जून 2007 को अमेरिका में पेश किया गया था। इसे 4 जीबी और 8 जीबी तक स्टोरेज के साथ पेश किया गया था।

जामिया में खुलेगा मेडिकल कॉलेज, केन्द्र ने दी मंजूरीः–

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में मेडिकल कॉलेज बनेगा। विज्ञान भवन में जामिया के शताब्दी वर्ष दीक्षांत समारोह में यूनिवर्सिटी की वाइस चांसलर प्रो0 नजमा अख्तर ने यह ऐलान किया। 2021 में जामिया ने मेडिकल कॉलेज खोलने के प्रस्ताव का अपनी एग्जिक्यूटिव काउंसिल में पास किया था। वीसी ने कहा कि हमारे यहाँ फिजियोथेरेपी, डेंडिस्ट्री है मगर मेडिकल कॉलेज की कमी थी। मेडिकल कॉलेज के लिए मैंने प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के सामने प्रस्ताव रखा था।

चॉकलेट चोरी ने पहुँचाया जेलः–

ब्रिटेन में कुछ महीने पहले तकरीबन लाखों चॉकलेट चोरी करने के आरोप में एक व्यक्ति को जेल की सजा मिली है। जॉबी पॉल नाम के आरोपी पर एक इंडिस्ट्रियल यूनिट से चॉकलेट चुराने का आरोप था। इस मामले में उसे अब 28 महीने जेल की सजा सुनाई गई है। पुलिस का कहना है कि सजा चोरी की गई चॉकलेट की कीमत करीब 42 लाख रूपये के बराबर थी।

सिर से अखरोट तोड़ने का रेकॉर्डः–

भारत के नवीन कुमार माथे से अखरोट तोड़े जाने के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने एक मिनट में अपने माथे से 273 अखरोट तोड़ कर विश्व रिकॉर्ड कायम किया है। इस तरह नवीन ने औसतन एक सेकंड में 4.5 अखरोट तोड़े। उनके इस रेकॉर्ड को गिनीज़ बुक में भी जगह दी गई है। इससे पहले यह कीर्तिमान पाकिस्तान के मुहम्मद राशिद के नाम था। राशिद ने 2018 में 254 अखरोट तोड़ कर यह रेकॉर्ड अपने नाम दर्ज किया था।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 01/09/2023 تاریخ

स्टॉफ़ क्वाटर्स की तामीर के लिए अपील

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, दारुल उलूम और उसकी ब्रांचों में इल्मी तालीमी सिलसिला बराबर जारी है, टीचर्स व स्टॉफ अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे रहे हैं, टीचर्स व स्टॉफ की अधिकता की वजह से दारुलउलूम में उनके रहने की गुंजाइश नहीं रही तो दारुलउलूम के मेन कैम्पस के अलावा माहद सिकरौरी में स्टॉफ क्वाटर्स और माहद के करीब नदवा कालोनी की तीन मंज़िला बिल्डिंग तामीर हुई, मगर अब भी स्टॉफ के लिए क्वाटर्स की कमी बहुत ज़ियादा महसूस की जा रही है, इस सूरते हाल की वजह से नदवा मेन कैम्पस से करीब मुहल्ला मकारिम नगर में कुछ और स्टॉफ क्वाटर्स बनाने का फैसला किया गया है, और अल्लाह तआ़ला की मदद के भरोसे पर यह तामीर शुरु कर दी गयी है।

नये स्टॉफ क्वाटर्स की यह बिल्डिंग तीन मंजिला होगी, जिसमें 9 फेमली क्वाटर्स होंगे, इसकी तामीर पर 1,15,00000/— (एक करोड़ पंद्रह लाख) रूपये के खर्च का अंदाज़ा है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हज़रात के सहयोग से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम ज़रूरत की ओर फौरन तवज्जोह फरमायेंगे और नदवतुल उलमा के कारकुनों का हाथ बटायेंगे।

मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखेंः
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजेंः
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा—ए—करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **8736833376** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
—ःतअ़मीरः—
A/C No. 10863759733

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2021 To 2023
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 22 - Issue 05

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

DESIGNED BY SAAD HAMDANWALA 9860446783

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3